मासिक

वैदांग ज्योति

प्रधान सम्पादक
वैद्य पं. नारायणशर्मा कौशिक

अक्टूबर 1998 दीपावली विशेषांक

दैनिक पूजा पाठ विशेषांक

卐 मुख्य आकर्षक 卐

1 महालक्ष्मी स्तोत्र पाठ
2 चौबीस अवतार नमस्कार
3 शिव पंचाक्षर स्तोत्रम्
4 श्री गायत्री स्तुति
5 कर्म का सन्देश
6 संध्यामुपासीत
7 हवन की विशेषता
8 नित्य हवन विधि
9 चर्पट पंचरिका
10 गुरु महिमा
11 अन्य सर्वजनोपयोगी पठनीय प्रमाणिक सामग्री

एक प्रति 7 रु. वार्षिक 80 रु. आजीवन 1151 रु.

ईष्ट आराध्य देव परम शक्ति स्वरुप अंजनो नंदन पवन पुत्र श्री रामदूत श्री सालासर हनुमानजी महाराज सालासर (चूरु) राज. वेद माता गायत्री मां के चरणों में सादर समर्पित ।

–: प्रेरणा एवं आशीर्वाद :–

1 पूज्य गुरुदेव परम श्रद्धेय श्री 1008 श्री श्री जी महाराज निम्बार्काचार्य, सलेमाबाद (राज.)
2 पूज्य गुरुदेव श्री 1008 श्री सूक्ष्म स्वरुप वेदमूर्ति स्व. पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ब्रह्मवर्चस्व, शांति कुंज हरिद्वार (उ.प्र.)
3 अनंत श्री विभूषित श्रीमज्जगदगुरु श्री स्वामी श्री 1008 श्री श्री निवासाचार्य जी महाराज श्री आदि सिद्धि स्थान नागोरिया मठ, डीडवाना जिला नागोर (राज.)

- वेदांग ज्योति के संरक्षकगण -

1 **ब्रह्मर्षि पं. श्री चित्रमलजी भारद्वाज**
ज्योतिषाचार्य, सराय रोहिला दिल्ली–7
2 **श्रीमान् के.एल.निषाद भरमगढ** (M.P.)
3 **ब्रह्मर्षि डॉ. (प्रो.) श्रीराधेश्याम मिश्र 'परमहंस'** देहली इंजीनियरिंगकॉलेज,देहली6
4 **पं. श्री नारायणलाल त्रिवेदी, तिलौली (भीलवाड़ा)**

卐 सम्पादक मण्डल 卐

ब्रह्मर्षि वैद्य पं.नारायण शर्मा कौशिक
प्रधान सम्पादक

1 **पं. अश्विनी कुमार शर्मा शास्त्री**
अमृतसर (पंजाब)
2 **श्री अर्जुनसिंह सिद्धार्थ,**
पत्रकार आश्रम, टिटिहिरिया (उ.प्र.)
3 **पं. श्री हरिदेव द्विवेदी**
राज ज्योतिषी. नई दिल्ली
4 **डॉ. श्री घनश्याम ठाकुर, इन्दौर** (M.P)
5 **ज्योतिषी पं. श्री बलरामजी उपाध्याय**
रेग्मी मु. पो. खुर्कोट (पर्वत) नैपाल
सह संपादक

ज्यो.मार्त्तण्ड श्रीमती कुमुदकौशिक संपादिका

1 **डॉ.शुभदा पाण्डेय [प्रवक्ता]**
असम विश्वविद्यालय शिलचर (असम)
2 **श्रीमती रेखाजी शर्मा (जज)**
ACJM वरिष्ठ खण्ड, नागौर
3 **कुमारी निर्मलाजी कल्ला**
कुचामन सिटी, नागौर
4 **कुमारी एम. शर्मिला नाहर**
मेलापोर चेन्नई (मद्रास)
सह सम्पादिका

पं. घनश्याम कौशिक 'विद्यार्थी' व्यवस्थापक
श्रीमतीगायत्री कौशिक,कु.विजय लक्ष्मीकौशिक
उप व्यवस्थापिका

नोट- 1. सभी पद मानद एवं अवैतनिक सह योगार्थ है । 2. पत्रिका में प्रकाशित लेखों के विचार लेखकों के स्वतंत्र होते है संपादक मण्डल का उसमें कोई उत्तरदायित्व नहीं है अतः शंका समाधान हेतु लेखक गण से संपर्क करे तथा उसकी सूचना प्रधान सम्पादक को अवश्य भेजे ।

चेतावनी-इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना को चुराकर छापना कोपीराईट अधिकार का उल्लंघन होगा । अतःकोई महाशय साहस नहीं करे ।

सादर आभार । धन्यवाद । प्र.स.

।।श्री गणेशाय नमः।।

भारत सरकार से विज्ञापनों के लिए स्वीकृत

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्य भर्गो देवस्य धीमिहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।

भावार्थ- उस प्राण स्वरूप, दुःखनाशक, सुख स्वरूप, श्रेष्ठ तेजस्वी, पाप नाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हमारी आत्मा में धारण करें। वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करें। (यजु. अ. ३६/मं.३)

पंजीयन सं. R.N.I.
No. 48927/91

वेदांग ज्योति

हिन्दी मासिक

संस्करण 6500
डाक पंजीयन संख्या
R.J. 4511

वर्ष	मेड़ता सिटी	वितरण कार्तिक मास पूर्णिमा वि.सं. २०५५	अक्टूबर	संख्या १०
१३	(मीरां नगरी)	दैनिक पूजा पाठ विशेषांक	१९९८	पूर्णसंख्या १५१

।। श्री महालक्ष्म्यष्टकम ।।

(लक्ष्मी साधना हेतु)

भूमिका - त्रिपुर सन्दरी भगवती महालक्ष्मी की आराधना में श्री इन्द्र कृत श्री महालक्ष्म्यष्टक स्तोत्रं की विशेष महत्ता है। विधानानुसार दीपावली की निशा में १०८ पाठ एकाग्रचित्त से कोई भी साधक कर्त्ता हो तो भगवती की कृपा बनी रहती है, एवं लक्ष्मी वास करती है ऐसा आर्ष ग्रन्थों में अनुभूत उल्लेख मिलता है।

स्तोत्र पाठ

(नमो भगवती महालक्ष्मी इन्द्र कृत स्तोत्रं करोमि)

नमस्तेऽस्तु महामाये श्री पीठे सुरपूजिते । शंख चक्र गदाहस्ते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।१।।
नमस्ते गरूड़ारूढ़ कोलासुर भयक्ङरि। सर्व पाप हरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।२।।
सवत्रे सर्ववरद सर्वदुष्टभक्ङरि। सर्व दुःख, हरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।३।।
सिद्धि बुद्धि प्रदे देवि भुक्ति मुक्ति प्रदायिनीं, मन्त्रमूर्ते सदा देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।४।।
आद्यन्तरहिते देवि आद्य शक्ति महेश्वरि। योगजेयोगसम्भूते महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।५।।
स्थूल सूक्ष्म महारौद्रे महाशक्ति महोदरे। महा पाप हरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।६।।
पद्मासनस्थिते देवि परब्रह्म स्वरूपिणी। परमेशि जगन्मात महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।७।।
श्वेताम्बर धरे देवि नानाऽलंकार भूषिते। जगत्स्थिते जगन्मातर्म महालक्ष्मि नमोऽस्तु ते ।।८।।
महालक्ष्म्यष्टक स्तोत्रं यः पठेद्भक्ति मान्तरः सर्व सिद्धि महाप्नोति राज्यमाप्नोति सर्वदा ।।९।।
एक कालं पठेन्नित्पृ महापापविनाशनम्। द्वि कालं याः पठेन्नित्यं धन धान्य समन्वितम् ।।१०।।
त्रिकालं पठेन्नित्पृ महापापविनाशम्। महालक्ष्मीर्भ वेन्नित्यम् प्रसन्ना वरदां शुभा ।।११।।

इति इन्द्रकृत श्री महालक्ष्म्यष्टकम सम्पूर्णमे। ।।शुभम।।

तिथि- पूर्णिमा गुरू नानक जयंती २०५५

विनीत - प्रधान सम्पादक (अवैतनिक)
ब्रह्मर्षि डॉ. नारायण कौशिक

ॐ श्री गुरुवे नमः ।। ॐ भूर्भुव स्वः।। ॐ गं गणपतये नमः

सम्पादकीय.... अपनों से अपनी बात

दीपावली एवं नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं

तमसो मा ज्योतिर्गमय

परम श्रद्धेय निज धर्मानुरागी एवं विविध विधि के ग्राह्य विवेकशील आत्मीय सज्जनों। ज्योतिर्मय पर्व दीपावली की मधुर वेला पर हार्दिक अभिनन्दन! स्मरण !! एवं वन्दन !!! इसी के साथ वेदांग ज्योति पत्रिका के सम्मानीय/प्रतिष्ठित सज्जनों, सदस्यों, विद्वान लेखकों, पाठकों, विज्ञापनदाताओं एवं शुभचिन्तकों के लिए दीपावली की मंगलकामनाओं के साथ अनुरोध है कि अधिष्ठात्री महा लक्ष्मी आपको समृद्धि मय सौख्य प्रदान करें। महालक्ष्मी का यह मंत्र जपनीय सदैव ग्राह्य है।

महालक्ष्मी नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरी।
हरि प्रिय नमस्तुभ्यं नस्तुभ्यं दयानिधे ।।
ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ! ॐ महालक्ष्मै नमः ।।

इस मंत्र का जप जितनी श्रद्धा से पवित्र भावना से जपे अवश्य लाभ होगा। इसी सन्दर्भ में दीपावली की पावन बेला में हमारी भावना एवं प्रेरणा सदैव 'सर्वजन हिताय - सर्वजन सुखाय' की होनी चाहिए। दीपोत्सव का अनूठा त्यौहार जीवन के लिए एक नाय संदेश एवं प्रेरणा लेकर आता है। दीप मालिका जिस तरह अंधकार को भेदन का प्रयास करती है, उसी तरह मनुष्य अपने जीवन को सार्थक बनाने के लिए/जीवन को सफल बनाने के लिए प्रयास करता है, मार्ग में आने वाली बाधाओं को ग्राह्य करते हुए संघर्ष से मंजिल प्राप्त कर विजयी ध्वज फहराता है, ठीक यही संदेश दीपावली का इतिहास हमें देता है।

इसी संदर्भ में वेदांग ज्योति का यह दसवां अंक आपकी सेवा में नित्योपयोगी दैनिक साधना का पाठ आदि मंत्र सहित विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया गया है। इस अंक में दैनिक जीवन में सभी मंत्रों का/नियमों का/स्तुति/प्रार्थना आदि का बोध कराया जाने का प्रयास किया गया हैं

सज्जनों ! वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारतीय संस्कृति की अनुपालना का परिदृश्य नजर अन्दाज होने जा रहा है, इसी ध्येय से (मंत्र, तंत्र, यंत्र के अंक का प्रकाशन नहीं करके) इस अंक का प्रकाशन किया गया है। सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन में वैदिक परम्परा के प्रति जन भावना को, मन स्थिति को साधना-पूजा-स्वाध्याय-ध्यान-तप-त्याग जो भी आप स्वेच्छा से विशुद्ध कम्र के साथ अपना सकेंगे तभी लक्ष्मी की अटूट कृपा होगी। तथा वाक् पटुता के साथ मां सरस्वती अपना भण्डार को आपके लिए सदैव खुला रखेगी। हम हमारे महर्षियों की साधना को भूलें नहीं, अनुकरण

करते हुए व्यवहारगत जीवन में अपनायेंगे तभी मानवीय गुणों का प्रदर्शन यथावत होगा। यही संदेश दीपोत्सव के पवित्र त्यौहार पर हम ग्रहण करें यह प्रतिज्ञा धारण करे एवं निभायें तभी आदर्श मान्य होगा।

कथनी करनी में अन्तर रखना धोखा है।
अपनी ही जिन्दगी के साथ कार्य अनोखा है।।
करलो संकल्प इस पावन पर्व पर चलना ठीक है।
मत देखो किसी को यह जीवन कठिन है।।
हो सके उतना हित चिन्तन करते हुए आगे बढ़ो।
भारतीय संस्कृति की पालना में सदैव चढ़ो बढ़ो।।
सामाजिक साधना मानव सेवा धर्म का आधार है।
परस्पर मधुरता रहे राग द्वेष का सहारा बेकार है।।
स्मृति पुराणों में छपी बातों को जीवन में उतारो।
'कौशिक' नारायण सदैव आदर्श को जीवन में पालन करो।।

साथियों दीपावली का पर्व हमें यह भी संदेश देता है कि

नफ़रत के पैबन्दे को खोलकर तो देखो।
प्रेम का अमृत खोलकर तो तुम देखो।।
दो मीठे शब्द बोलकर तो तुम देखो।
जिन्दगी का नक्शा बदला नज़र आयेगा देखो।।

हमारी संस्कृति 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' पर भी आधारित हैं सत् चित्त अमृत की जिन्दगी हेतु दीप की शिक्षा ग्रहण करते हुए प्रकाश पुंज की छवि जीवन में धारण करते हुए 'परोपकार पुण्याय' को अपनाना चाहिए।

पुनः वेदांग ज्योति के सभी ग्राहकों से प्रार्थना है कि पत्रिका की नियमितता बनाये रखने हेतु अपना सहयोग एवं सदस्यता राशि शीघ्र डाक द्वारा भेजने की कृपा करे।

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि पं. नासयण लाल जी त्रिवेदी, ज्योतिर्विद मु. तिलौली पो. सांगवा, जिला भीलवाड़ा (राज.) ३११४०२ ने स्वेच्छा से प्रेरित होकर वेदांग ज्योति का संरक्षक पद ग्रहण किया है तथा भविष्य में भी यथावत आर्थिक एवं अन्य सहयोग देने के साथ प्रचार प्रसार का संकल्प इसी माह से लिया है, वेदांग ज्योति परिवार आपका हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन करता है। तथा ईश्वर से कामना करता है कि प्रभु आपको उत्तरोत्तर समृद्धिशाली एवं प्रगतिमय बनाये।

आप अपने पूर्वजों की स्मृति में वेदांग ज्योति का अंक प्रकाशित कराते हुए ज्ञान ज्योति का प्रचार प्रसार कर सकते है। विशेष सम्पादक बनकर अपनी ओर से भी अंक प्रकाशित करना चाहे तो व्यवस्था है। यह अंक आपको कैसा लगा, यह प्रतिक्रिया अवश्य भेजे। पुनः दीपोत्सव की हार्दिक बधाई।

ज्योति पर्व दीपमाला की मंगलमय कामना।
स्नेह भाव दिन दिन बढ़े अखण्ड सद्भावना।

तिथि-कार्तिक पूर्णिमा २०५५
(पोकर पूनम)

विनीत- ब्रह्मर्षि डॉ नारायण शर्मा कौशिक
प्रधान सम्पादक (अवैतनिक)

MEENAKSHI
MATRIMONIAL SERVICES

Mantra tantra and yantra for instaneous marriage succes in love romance affairs etc. The only matrimonial agency run by qualified astrologer and ekpert tantrik now offers you.

झां झां झां हां हां हां हें हें

— 12,500 जप Rs. 4600/-

ZHAM ZHAM ZHAM HHAM HHAM HHAM HEM HEM - 12,500 JAAP TO ATTRACT ANYBODY ESPECIALLY OF OPPOSITE SEX

ॐ ह्रीं रक्ष रक्ष चामुण्डे तुरू तुरू आमुकीमाकर्षय आमुकीमाकर्षय ह्रीं

OM HIRAM RAKSH RAKSH CHAMUNDAYA TURA TURA AMUKAKARSHY AKASRSHY HRIM 12,500 JAPP Rs. 6500/-

ॐ नमो भगवते रूद्राय ॐ चामुण्डे अमुकों मे वशमानय स्वाहा

12500 जप Rs. 8600/-

OM NAMO BHAGWATYA RUDRAI OM CHAMUNDAY NAME OF PERSON MA VASHMANI SWAHA 12500 JAAP

ॐ ह्रां हंस : स्वाहा 40,000 जप

OM HRAM HANS SWANS SWAHA (40,000 JAAP TO MARRY AS PER YOUR WISH Rs. 6800/-)

WE HAVE SPECIAL POOJA AND HOMA FOR MANGAL DOSHAS DELAY DUE TO RAHU IN SEVENTH OR SATURN

Siddh Bhashma, Long, Akasrshan, Mohan, Vashikaran, Yantra as per Chintamani. Kam Ratan, Mantra Mohovidi and Yantra Mahamave are Made to your order or are available, Ex-stock. Siddhi Mangal (Munga) Pokhraj (Yellow Suffire) Nilam (Blue Suffire) Locket, Rings and Lucky Stone are also available.

Consult us for your special love/romance/family/marriage/affaris/adulty and other secret problems best instentenius solution and total secret.

J. Nath, B.Sc.

Jyotish Mahamahopadhya, Tantrik Samrat
K-35, RH-1, Sector 7, Vashi, New Bombay - 400703
Phone No. 7822175 Phone/Fax NO. 7822973

ॐ तत्सत्, श्री गुरुदेवाय नमः

प्रातः स्मरण स्तोत्रम्

प्रातः स्मरामि हृदि संस्फुरदात्मतच्वम्,
सच्चित्सुखं, परमहंसगतिं तुरीयम्।
यत्स्वप्नजागरसुषुप्तिमवैतिनित्यम्,
तद्ब्रह्म निष्कलमहं न च भूतसंघः ।। १ ।।
प्रातर्भजामि मनसो वचसामगम्यम्,
वाचो विभंति निखिला यदनुग्रहेण।
यन्नेति नेति वचनैर्निगमा अवोचुस्तं देव
देवमजमच्युतमाहुरग्र्यम् ।। २ ।।
प्रातर्नमामि तमसः परमर्कवर्णं,
पूर्णं सनातनपदं पुरूषोत्तमाख्यम्।
यस्मिन्निन्दं जगदशेषमशेषमूर्तौ,
रज्जवां भुजड्गम इव प्रतिभासितं चै।। ३ ।।
श्लोक त्रयमिदं पुण्यं लोकत्रयविभूषणम्,
प्रातः काले पठेद्यास्तु स गच्छेत्परमम् पदम् ।।
।।इति ।।

पन्च देव नमस्कार

एकात्मनो भिन्नरूपान् लोकरक्षणतत्परान्।
शिवविष्णुशिवासूर्यहेरम्बान् प्रणमाम्यहम् ।। १ ।।
गणाधिपं सदावन्दे विघ्नवान्तदिवाकरम् ।
श्रेयसां निधिमानन्द श्रेयसे भूयसे मम ।। २ ।।
सर्व मंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरणये त्र्यम्बिके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ।।२।।
शुद्धस्फटिकसंकाशं त्रिनेत्रं चन्द्रशेखरम् ।
इन्दुमण्डलमध्यस्थं वन्दे देवं सदा शिवम् ।। ४ ।।
नमः पुंसे पुराणाय पूर्णानन्दाय विष्णवे ।
निरस्तनिखिलध्वान्त तेजसे विश्वेहेतवे ।। ५।।
पतये ग्रहताराहनां भद्राय लोकसाक्षिणे।
नमो भगवते तुभ्यमादित्यायाख्लात्मने ।। ६ ।। इति।।

चौबीस अवतार नमस्कार

मत्स्यं कूर्म च वाराहं नरसिंहं च वामनम्।
रामं रामं च कृष्णं च बुद्ध कल्किं नमाम्यहम् ।।१।।
नारायणं नारदं च कौमारं कापिलं तथा ।
ऋषभं यज्ञपुरुषं दत्तात्रेयं पृथं तथा ।। २ ।।
धन्वन्तरिं च हंस च मोहनीं व्यासमेव च ।
हयग्रीवं हरिं चैव प्रणामामि पुनः पुनः ।। इति।।

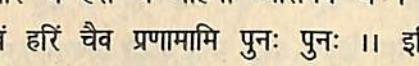

द्वादश ज्योतिर्लिंगानि नामानि

सौराष्ट्रे सौमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम।
उज्जयिन्सां महाकालमोंकाममलेश्वरम् ।। १ ।।
पारल्यां वैजनाथं च डाकिन्यां भीमशंकरम्।
सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकानने ।। २ ।।
वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमीतटे ।
हिमालये तु केदारं घुसृणेशं शिवालये ।। ३ ।। इति।।

श्री गुरुवन्दना

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु र्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुःसाक्षात् परंब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः ।। १ ।।
अज्ञाततिमिरान्धस्य ज्ञानाजनशलाकया ।
चक्षुरुन्मिलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ।। २ ।।
अज्ञानमहलन्तारं जन्मकर्मनिवारणम् ।
ज्ञानवैराग्यसिध्यर्थं गुरुपादोदकं पिवेत ।। ३ ।।
कर्मणा मनसा वाचा सर्वदाराध्येद्गुरुम ।
दीर्घदण्डं नमस्कृत्य निर्ल्लज्जो गुरुसन्निधौ ।। ४ ।।
गुरवो बहवःसन्ति शिष्यवित्तापहारकाः ।
तमेकं दुर्लभं मन्ये शिष्यहृत्तापहारकम् ।। ५ ।।
अखण्डमण्डलकाकारंव्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरुवे नमः ।। ६ ।।
ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः पूजामूलं गुरोः पदम् ।

मन्त्रमूलं गुरोर्वाक्यं मुक्तिमूलं गुरोः कृपा ।। ७ ।।
ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्ति,
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्वमस्यादि लक्षणम्।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षीभूतं,
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरूं तं नमामि ।।८।। इति।।

षट्पदीस्तोत्रम्

अविनयमपनय विष्णो दमय मनः शमय विषयमृगतृष्णाम्।
भूतदयां विस्तार तारय संसारगरतः ।।१।।
दिव्यधुनीमकरन्दे परिमलपरिभोगसच्चिदानन्दे।
श्रीपतिपदारविन्दे भवभय खेदच्छिदे वन्दे ।।२।।
सत्यपि भेदापगमे नाथ ! तवाहं न मामकीनस्त्वम्।
सामुद्रो हि तरंग क्वचन समुद्रो न तारंगः ।।३।।
उद्धृतनग! नगभिदनुज! दनुजकुलामित्र! मित्रशशिदष्टे।
दृष्टे भवति प्रभवति न भवति किं भवतिरस्कारः ।।४।।
मत्स्यादिभिरवतारैरवतारवताऽवता सदा वसुधाम्।
परमेश्वर! परिमाल्यो भवता भवतापभीतोऽहम् ।।५।।
दामोदर! गुणमन्दिर! सुन्दरवदनारविन्द! गोविन्द ।
भवजलधिमथनमन्दिर! परमंदरमपनय त्वं मे ।।६।।
नारायण! करूणामय! शरणं करवाणि तावकौ चरणौ।
इति षट्पदी मदीये बदनसरोजे सदा वसतु ।।७।। इति।।

भगवत्प्रार्थना

ॐ नमः शम्भवाय च मयो भवाय च,
नमः शकूडराय च मयस्कराय च,
नमःशिवाय च शिवतरय च ।।१।।
वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशाँकःप्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च।
नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः पुनश्च भूयोऽपि नमो
नमस्ते ।।२।।
नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व।
अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं, सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः ।।३।।

विश्वेश्वर सकलसृष्टिकरं परेशं पूर्णं महेशमजरं बलदं वरेणयम्।

ध्येयं नमस्यममरं तमजं महान्तं तेजोमयं भवपतिं शरणयं प्रपद्ये ।।४।।

नमस्ते सते ते जगत्कारणाय नमस्ते चिते सर्वलोकाश्रयाय।

नमोऽद्वैततत्वाय मुक्तिप्रदाय नमो ब्रह्मणेव्यापिने शाश्वताय ।।५।।

नमस्ते नमस्ते विभो विश्वमूर्ते नमस्ते नमस्ते चिदानन्दमर्ते।

नमस्ते नमस्ते तपो योगगम्य नमस्ते नमस्ते श्रुतिज्ञानगम्य ।।६।।

भयानां भयं भीषणं भीषणानां गतिः प्राणिनां पावनं पावनानाम्।

महोच्चैः पदानां नियन्तृत्वमें परेषां परं रक्षणं रक्षणानाम् ।।७।।

वयं त्वां स्मरामो वयं तवां भजामो वयं त्वां जगत्साक्षिरूपं नमामः

सदेकं निधान निरालम्बमीशं भवाम्भाधिपोतं शरणयं ब्रजामः ।।८।।

श्रीकृष्ण विष्णो मधुकैटमारे भक्तानुकम्पिन् भगवन्मुरारे।

त्रायस्व मां केशल लोकपाल गाविन्द दामोदर माधवेति ।।९।।

श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे हे नाथ नारायण वासुदेव।

जिह्ने पिव स्वामृतमेतदेव गोविन्द दामोदर माधवेति ।।१०।।

संसारकूपे पतितोऽत्यगाधे मोहान्धपूर्णे विषयाभितप्ते।
करावलम्बं मम देहि नाथ गोविन्द दामोदर माधवेति ।।११।।

भजस्व मंत्रं भवबन्धमुक्त्यै जिह्वे रसज्ञे सुलभं मनोज्ञम्।

द्वैपायनाद्यैर्मुनिभिः प्रजप्तं गोविन्द दामोदर माधवेति ।।१२।।

गोपालबालं भुवनैकपालं संसारमायामतिमोहजालम्। यशोविशालं शिशुपालकालं बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि ।।१३।।

करारविन्देन पदारविन्दं मुखारविन्दे विनिवेशयन्तम्। चटस्य पत्रस्य पुटेशयानं बालंमुकुन्दं मनसा स्मरामि ।।१४।।

ध्येयं सदा परिभवध्नमभीष्टदोहं, तीर्थास्पदं शिवविरञ्चिनुतं शरणयम्।

भृत्यार्तिह प्रणतपाल ! भवाब्धिपोतं, वन्दे महापुरूष ! ते चरणाविन्दम् ।।१५।।

त्याक्त्वा सुदुस्त्यजसुरेप्सितराज्यलक्ष्मीं, धर्मिष्ठ ! आर्यवचसा यदगादरण्म्।

मायामृगं दयितयेप्सितमन्वधावत्, वन्दे महापुरूष ! ते चरणाविन्दम् ।।१६।।

अच्युतं केशवं रामनारायणं कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम्।

श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं जानकीनायकं रामचन्द्रं भजे ।।१७।।

शंकरं त्र्यम्बकं मुण्डमालं शिवं, आशुतोषं भवं नीलकण्ठं हरम्।

शशिधरं शूलिनं शैलजावल्लभं पार्वतिनायंक भालचन्द्रं भजे ।।१८।।

अचिन्त्यरूपो भगवान्निरंजनो विश्वंभरो ज्ञानमयश्चिदात्मा।

विशोधितो येन हृदिक्षणंनो वृथा गतं तस्य नरस्य जीवितम् ।।१९।।

अभयं देहि देवेश ! पापादस्मान्निवारय। वयं त्वां शरणं यामो रक्ष नः शरणागतान्।।

विनयं देहि देवेश ! दुर्धी मम निवारयं विधां बुद्धिं बलं देहि पापेभ्यो रक्ष सर्वदा।।

भक्ति देहि श्रुतं देहि धर्मं देहि स्वतन्त्रताम्। देहि योगं च बुद्धिं च जनानं हितकारिणीम्।।

हे विभो ! आनन्दसिन्धो ! मे च मेघा दीयताम्। यच्च दुरितं दीनबन्धु ! तच्च दूरं नीयताम्।।

चंचलानि चेन्द्रियाणि मानसं मे पूयताम्। शरणं याचे आनतोऽहं सेवको ह्यनुगृह्यताम्।।

त्वयि च वीर्यं विद्यते यत् तच्च मयि निधीयताम्। हे दयामय ! अयि अनादे ! प्रार्थना मम श्रूयताम्।

इति ।।

अथ शिव पंचाक्षरस्तोत्रम्

ॐ नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्मांगरागाय महेश्वराय। नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै नकाराय नमः शिवाय ।।१।।

मंदाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय। मंदारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय तस्मै मः काराय नमः शिवाय ।।२।।

शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय। श्रीनीलकण्ठाय वृषभध्वजाय तस्मै शिकाराय नमः शिवाय ।।३।।

वशिष्ठकुम्भोद्भवगातमार्य मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय। चन्द्रार्क वैश्वानरलोचनाय तस्मै व काराय नमः शिवाय ।।४।।

यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनय। दिव्याय देवाय निरंजनाय तस्मै यकाराय नमः शिवाय ।।५।।

पंचाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ। शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ।।६।। इति।।

शिवध्यानं वा वन्दनम्

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं,
रत्नाकल्पोज्ज्वलांगं परशुमृगवरा भीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात्स्तुनममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानम्,
विश्वाद्य विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।१।।

वन्दे देवमुमापति सुरगुरुं वंदे जगत्कारणं।
वन्दे पन्नगभूषण मृगधरं वन्दे पशूनांपतिम्।
वन्दे सूर्यशशाङ्कवह्नियंन वन्दे मुकन्दप्रियं,
वन्देभक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम् ।।२।।

शान्त पद्मासनस्थं शशिधरमुकुटं पंच्चवक्त्रं त्रिनेत्रं,
शूल वज्रं च खड्गं परशुमभयद दक्षिणांगेवहन्तम्।
नागं पाशं च घण्टां डमरूकसहितं साङ्कुशं वामभागे,
नानालङ्कारदीप्तं स्फटिकमणिनिभं पार्वतीशं नमामि ।।३।।

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदावसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानि सहितं नमामि ।।४।।

असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिंधुपात्रे, सुरतरूवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं,
तदपि तव गुणानामीश ! पारं न याति ।।५।।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्व मम देद देव ।।६।।

त्वमेवं शरणयं त्वमेकं वरेणर्य, त्वमेकं जगत्पालंक स्वप्रकाशम्।
त्वमेवं जगत्कर्तृ पातृ प्रहर्तृ, त्वमेवं परं निश्चल ब्रह्मनौमि ।।

करचरणकृतं बाक्कयजंकर्मजंवा, श्रवणनयनजंवा। मानसंवापराधं
विहितमविहतंवासर्वमेतत्क्षमस्व, जयजयकरुणाब्धेश्रीमहादेवशंभो

चन्द्रोद्भासितशेखरे स्मरहरे गंगाधरे शंकरे,
सर्पैर्भूषितकण्ठकर्णविचरे नेत्रोऽथ वैश्वानरे।
दंतित्वक्कृतसुन्दराम्बरधरे त्रैलोक्य सारे हरे।
मोक्षार्थंकुरु चित्तवृत्तिमचलामन्यैस्तु किं कर्मभिः।
ॐ तत्पुरुषाय विद्यहे महादेवाय धीमहि तनोरुद्रः प्रचोदयात्

।।इति।।

शिव नामावलिः

ॐ महादेव ! शिव ! शंकर ! शंभो ! उमाकांत ! हर त्रिपुरारे !
मृत्युजंय ! वृषभध्वज ! शूलिन ! गंगाधर ! मृड! मदनारे !
हर ! शिव ! शंकर ! गौरीशं ! वन्दे गंगाधरमीशम्!
रुद्रं पशुपतिमीशानं कलयेकाशीपुरनाथम्।
जयशंभो ! जयशंभो ! शिव ! गौरीशंकर ! जय शम्भो !
शिव शिवेति शिवेति शिवेति वा हर हरेति हरेति हरेति वा।
भव ! भवेति भवेति भवेति वा मृड ! मृडेति मृडेति मृडेति वा।
भज मनः शिवमेव निरंतरं, जप मनः शिवमेव निरंतरम्

।।इति।।

पुष्पांजलि मंत्र

ॐ नमोऽस्त्वनेन्ताय सहस्त्रमूर्तये सहस्त्रपादाक्षिशिरोरुवाहवे।
सहस्त्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्त्राकोटि युगधारिणे नमः ।।१।।
यं ब्रह्मा वरुणेद्ररुद्रमरूतः स्तुन्वन्ति दिव्यैःस्तवै,

वेदैः सांगपदकमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः।
ध्यानावस्थिततद्मतेन मनसा पश्चन्ति यं योगिना,
यस्यान्तं न विदुःसुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः ।।२।।

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
तेह नांक महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ।।३।।

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे।
स मे कामान् कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु ।।४।।
कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः ।।५।।
ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्।
सम्बाहुभ्यां धमति संपत त्रैद्यावाभूमी जनयन् देव एकः ।।६।।

ॐ नानासुगंधपुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च ।
पुष्पांजलि मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।। ए तत्सदिति ।।७।।

श्री गायत्री स्तुति

ॐ नमस्ते देवि ! गायत्री ! सावित्री ! त्रिपदेऽक्षरे !
अजरे ! अमरे ! मातस्त्राहि मां भवसागरात् ।।१।।
नमस्ते सूर्यसंकाशे ! सूर्यसावित्रिकेऽमले !
ब्रह्मविधे ! महाविधे ! वेदमातर्नमोऽस्तुते ।।२।।
अनन्तकोटि ब्रह्माण्डव्यापिनि ! ब्रह्मचारिणी ! ।
नित्यानन्दे ! महामाये ! परेशानी ! नमोऽस्तुते ।।३।।
त्वं ब्रह्मा त्वं हरिः साक्षात् रुद्रस्त्वं चन्द्रदेवता ।
मित्रस्त्वं वरुणस्त्वं च त्वमग्निरश्विनौ भगः ।।४।।
पूषाऽर्यमा मरुत्वांश्च ऋषयोऽपि मुनीश्वराः ।
पितरो नागयक्षाश्च गन्धर्वाप्सरसां गणः ।।५।।
रक्षो भूतपिशाचाश्च त्वमेव परमेश्वरी! ।
ऋग्यजुः सामवेदाश्च अथर्वांगिरसानि च ।।६।।
त्वमेव पंचभूतानी तत्वानि जगदीश्वरि।
ब्राह्मी सरस्वती सन्ध्या तुरीया त्वं महेश्वरी ।।७।।
त्वमेव सर्वशास्त्राणि त्वमेव सर्वसंहिताः ।
पुराणनि च तन्त्राणि महागममतानि च ।।८।।
तत्सद् ब्रह्मस्वरूपा त्वं किन्चित्सदसदात्मिका।
परात्परेशी गायत्री नमस्ते मातरम्बिके ।।९।।
चन्द्रे ! कलात्मिके ! नित्ये ! कालरात्रि !
स्वधे ! स्वरे ! स्वाहाकारे ! अग्निवक्त्रे !
त्वां नमामि जगदीश्वरि ।।१०।।
नमो नमस्ते गायत्री ! सावित्री ! त्वां नमाम्यहम् ।
सरस्वती ! नमस्तुभ्यं.तुरीये ब्रह्मरूपिणी ! ।।११।। इति।।

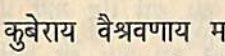

विजय प्राप्ति

ॐ यस्मिन् सर्व यतः सर्वं यः सर्व सर्वतश्च यः।
यश्च सर्वमयो नित्यस्तस्मै सर्वात्मने नमः ।।
ॐ शिव हरे शिव राम सखे प्रभो ! त्रिविध ताप निवारण हे विभो ।
अज जनेश्वर यादव पाहि मां, शिव हरे विजयं कुरु मे वरम्।।

नित्य कर्म क्यों किया जाता है?

मल, विक्षेप और आवरण के तीन दीप अन्तःकरण के है। निष्काम कर्म से मल दोष दूर होता है, विक्षेप अर्थात् चित की चंचलता उपासना से दूर होती है एवं आवरण (अज्ञान) ज्ञान से दूर होता है। निष्काम कर्म करने से अन्तःकरण शुद्ध होता है। जैसे "चित्त शुद्धये कर्म" चित्त शुद्धि के लिये निष्काम कर्म है।

यथा -

कायेन मनसा बुद्धया केवलैरिन्द्रियैरपि।
योगिनः कर्म कुर्वन्ति संगं त्यक्त्वात्मशुद्धये।।

मोक्ष की इच्छा वाले निष्काम कर्मयोगी अन्तकरण की शुद्धि के लिए स्वर्गादि फल की इच्छा का त्याग करके, केवल शरीर, मन बुद्धि और इन्द्रियों से नियत कर्म करते है, अतएव नित्यकर्म से ही चित्त की शुद्धि होती है। वैसे ही देह गेह है, जैसेः 'गृह शुद्धये मार्जनी' घर को शुद्ध पवित्र करने के लिये झाडू आदि है वैसे ही शरीर भी घर है।

देहों देवालयः प्रोक्तः स जीवः केवलः शिवः

यह शरीर देवता का मन्दिर है, मन्दिर में रहने वाला जीवात्मा सुख स्वरूप है। जैसे मनुष्य के घर में फूस कचरा पड जाता है वैसे ही जीवात्मा के घर (शरीर) में मल-कचरा पड़ जाता है। मल क्या है ? मनुष्य के पापाचरण रूप मल हैं। जैसे घर को शुद्ध करने के लिए नित्य प्रति झाडू आदि लगाने की आवश्यकता है वैसे ही अन्तःकरण को शुद्ध करने के लिए नित्य कर्म करने की आवश्यकता है, क्योंकि इन्द्रिय, मन, बुद्धि और चित्त में अशुद्धता से दोषों की उत्पति होती है और शुद्धता से दोषों की निवृत्ति होती है। प्रत्येक मनुष्य इस तरह शुद्ध होता है तभी समष्टि शुद्ध हो सकती है, हर एक मनुष्य की मानव समष्टि शुद्ध हुई है या नहीं, इसका विचार करने की आवश्यकता नहीं है, अपनी शुद्धि करने के लिये उसको प्रयत्न करना चाहिये। जंब तक नित्य कर्म से अन्तःकरण की शुद्धि नहीं होगी तब तक भक्ति और ज्ञान की प्राप्ति असंभव है, क्योंकि 'बुद्धि कर्मानुसारिणी' बुद्धि कर्मो के अनुसार विचारों को उत्पन्न करती है, सत्कर्म करने से सद् विचारों की उत्पति होती है और असत्कर्म करने से बुद्धि असद्धिचारों को पैदा करती है।

कर्म, ज्ञान प्राप्ति के वास्ते तथा लोक भलाई के लिए करना चाहिये। यथा भगवदुक्तिः

कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः।
लोकसंग्रहमेवापि सम्पश्यन् कर्तुमर्हसि।।

जनकादि ज्ञानी लोगों ने भी फल में अनासक्त होकर कर्मो के द्वारा ही सिद्धि (सम्यक्ज्ञान) को प्राप्त किया, तथा लोक संग्रहार्थ (लोगों को धर्म एवं कर्म में प्रवृत्त करणार्थ) प्रयोजन को देखते हुए तुम भी कर्म करने के योग्य हो। जैसे भगवान कहते है कि मैं भी लोकहित के लिए कर्म करता हूं।

नमे पार्थाऽस्ति कर्त्तव्यं त्रिषु लोकेषु किंचन।
नानवाप्तवाप्तव्य वर्त एव च कर्मणि।।

हे अर्जुन ! यद्यपि मुझे तीनों लोकों में कुछ भी कर्त्तव्य नहीं रहा है, और कोई अप्राप्त वस्तु करने की रह गई है, ऐसा भी नहीं, तथापि मैं कर्म करता हूं।

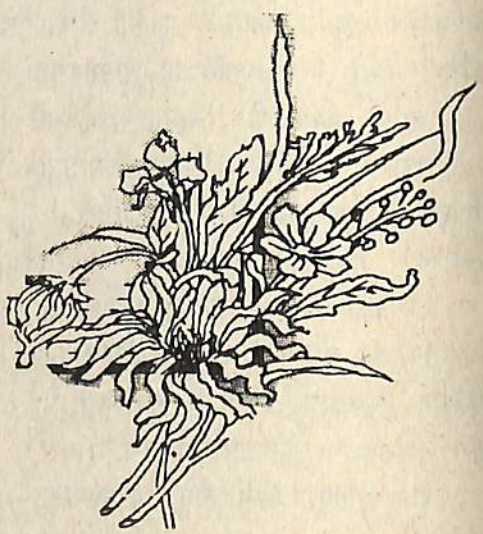

कर्म का संदेश

कर्मण्येवाधिकास्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भुर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि।।

तुझे कर्म करने का ही अधिकार है, उसका फल कभी तेरे अधिकार में नहीं है, कर्म का फल तेरे कर्म के हेतु न बने, कर्म न करने का भी तू आग्रह न कर।

कोई भी प्राणी कर्म किये बिना क्षण मात्र नहीं रह सकता।

न हि कश्चित् क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्।
कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः।।

कोई पुरुष एक क्षण भी कर्म न करता हुआ नहीं रह सकता। क्योंकि प्रकृति के गुण सभी से (सतत कुछ न कुछ) कर्म करा लेते है।

कर्म त्यागी की निंदा

कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य,
आसते मनसा स्मरन्।
इन्द्रियार्थान् विमूढात्मा,
मिथ्याचारः स उच्चयते।।

कर्मेन्द्रियों का संयम करने पर भी यदि कोई विमूढ होकर मन में विषयों का चिन्तन करता रहे, तो वह केवल मिथ्याचार (कपट, ढोंग) ही होगा।

कर्मकर्त्ता की श्रेष्ठता

यस्त्विन्द्रियाणि मनसा नियम्यारभतेऽर्जुन।
कर्मेन्द्रियैः कर्मयोगमसक्तः स विशिष्यते।।

जो मन का नियमन करके, उसके द्वारा अपनी इन्द्रियों को भी वश में कर लेता है और आसक्त न होता हुआ कर्मेन्द्रियों से (सिद्धि के लिये) कर्म योग का (कर्त्तव्य कर्म का) अनुष्ठान करता है, वही श्रेष्ठ है।

इस संसार में आरोग्यता, धन धान्यादि सम्पति, सुख, दरिद्रता रोगादि दुःख कर्मो के बिना नहीं है।

सुखस्य दुःखस्य न कोऽपि दाता,
परो ददातीति कुबुद्धिरेषः।
अहंकरोमीति वृथाभिमानः स्वकर्मसूत्रग्रथितो,
हि लोकः।।

कोउ न काहू दुख सुख कर दाता,
निज कृत कर्म भोग सब भ्राता।

कः कस्य हेतु र्दुःखस्य कश्च हेतुः सुखस्य वा।
स्वपूर्वार्जित कर्मैव कारणं सुखदुखयोः।।

कर्म प्रधान विश्व का राखा, जो जस
करइ तस फल चाखा।
करै जो कर्म पाव फल सोई, निगम
नीति अस कह सब कोई।
सकल पदार्थ है जग मांही, कर्म हीन
नर पावत नाहीं।

कर्म के द्वारा सत् असत् गति

कर्मैव कारणं चात्र सुगतिं दुर्गति प्रति।
कर्मैव प्राक्तनमपि क्षणं किं कोऽस्ति
चाक्रियः।।

इस संसार में सुगति एवं दुर्गति के प्रति कर्म ही कारण है। पूर्व कर्म को ही प्रारब्ध कहते है, क्या कोई जीव क्षण मात्र भी कर्म रहित रह सकता है? अर्थात् नहीं रह सकता।

संध्यादि कर्महीनों की अधोगति

संध्या येन न विज्ञाता संध्या येनानुपासिता।
जीवन्नेव भवेच्छूद्रो मृतः श्वा चाभिजायते।।

जो पुरुष संध्या नहीं जानता है और संध्या नहीं करता है वह जीता हुआ ही शुद्र है मरने पर कुत्ते की योनी को प्राप्त होता है।

नित्य कर्महीन मनुष्य की अधोगति निश्चय ही है, इसमें कोई संशय ही नहीं।

संध्या हीन की देव पितृ पूजा ग्रहण नहीं करते

न गृहन्ति सुराः पूजां पितरः पिण्डतर्पणम्।
स्वेच्छया च द्विजोश्य त्रिसंध्य रहितस्य च।।

तीनों काल की संध्या की उपासना से रहित है उस ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य का अपनी इच्छा से देवता पूजा की और पित्तर पिंड तर्पण को ग्रहण नहीं करते हैं।

स्वकर्म के द्वारा ज्ञान प्राप्ति

स्वे स्वे कर्मणयभिरतः संसिद्धिं लभते नरः।
स्वकर्मनिरतः सिद्धि यथा विन्दति तच्छृणु।।

अपने अपने कर्म में जो पुरुष तत्पर रहता है, वह मनुष्य उत्तम सिद्धि (ज्ञान) को प्राप्त होता है। स्वकर्म में तत्पर रहने वाले को जिस तरह सिद्धि की प्राप्ति होती है, वह श्रवण कर

यतः प्रवत्ति र्भूतानां येन सर्वमिदं ततम्।
स्वमकर्मणा तमभ्यर्चय सिद्धि विन्दति
मानवः।।

जिससे सब भूतों की प्रवृत्ति होती है और जिससे यह सब (संसार) व्याप्त हुआ है, उस परमेश्वर को स्वकर्म द्वारा पूजन करने से मनुष्य सिद्धि (परं पद) को प्राप्त होता है।

कर्म से भक्ति

ये तु सर्वाणि कर्माणि मयि संन्यस्य
मत्पराः।
अनन्येनैव योगेन मां ध्यायन्त
उपासते ।।

जो मेरे परायण हुए भक्तजन, सम्पूर्ण कर्मो को मुझ में अर्पण करके मुझ सगुण रूप परमेश्वर को ही तैल धरा सदृश, अनन्य ध्यान योग से निरन्तर चिन्तन करते हुए भजते है।

तथाच-

मत्कर्मकृन्मत्परम्मो भद्भक्तः संगवर्जितः।
निर्वैरः सर्वभृतेषु यः स मामेति पाण्डव ।।

हे अर्जुन ! जो पुरुष केवल मेरे ही लिये, सब कुछ मेरा समझता हुआ, यज्ञ, दान और तप आदि संपूर्ण कर्त्तव्य कर्मो को करने वाला है और मेरे परायण है अर्थात् मेरे को परम आश्रय और परम गति मानकर मेरी प्राप्ति के लिय तत्पर है तथा मेरा भक्त है अर्थात मेरे नाम, गुण, प्रभाव और रहस्य के श्रवण, कीर्तन, मनन, ध्यान और पठन पाठन का प्रेमसहित निष्काम भाव से, निरंतर अभ्यास करने वाला है और आसक्ति रहित है और संपूर्ण भूत प्राणियों में वैर भाव से रहित है, ऐसा वह अनन्य भक्ति वाला पुरुष मेरे को ही प्राप्त होता है।

कर्म से योग की प्राप्ति

आरुरुक्षोर्मुनेयोगं कर्म कारणमुच्यते

समत्व बुद्धि रूप योग में आरुढ होने की इच्छा वाले मनन शील पुरुष के लिए योग की प्राप्ति में निष्काम भाव से कर्म करना ही हेतु कहा गया है।

मम नास्ति कृतेनार्थो नाकृतेनेह कश्चन।
यथा प्राप्तेन तिष्ठामि ह्यकर्मणि क
आग्रहः।।

कर्म करने से मुझे कुछ भी प्राप्य नहीं है, एवं न करने से भी नहीं है। कर्म करना और कर्म न करना मेरे लिए एक जैसा है। जो प्राप्त होता है उसे करता हूं, कर्म न करने का भी आग्रह क्यों किया जाए।

एवं -

नैव तस्य कृतेनार्थो नाकृतेनेह कश्चन।
न चास्य सर्वभूतेषु कश्चिदर्थव्यपाश्रय।।

निरहंकार होने के कारण विधि निषेध रहित पुरुष को इस लोक में कर्म करने से उसे कोई लाभ नहीं होता है, ऐसे ही कर्म न करने से कोई हानि भी नहीं होती, और न वह किसी प्राणी का आसरा या भरोसा करता है।

तथा -

त्यक्त्वा कर्मफलासंगं नित्यतृप्तो निराश्रयः।
कर्मण्यभिप्रवृतोऽपि नैव किन्चित्करोति सः।।

जो कर्मों के फलों का त्याग कर निजानन्द में तृप्त रहता है, और किसी का आश्रय नहीं करता, वह स्वाभाविक और विहित कर्म में प्रवृत्त रह कर भी कुछ नहीं करता है।

कर्म से साक्षात्कार

ध्यानेनात्मनि पश्चन्ति केचिदात्मानमात्मना।
अन्ये सांख्येन योगेन कर्म योगेन चापरे।।

उस परम पुरुष को, कितने ही मनुष्य तो शुद्ध हुई सूक्ष्म बुद्धि से ध्यान के द्वारा हृदय में देखते हैं तथा अन्य कितने ही ज्ञान योग के द्वारा देखते है, एवं अपर कितने ही कर्म योग के द्वारा देखते है।

कर्म से परमपद

तस्मादसक्तः सततं कार्य कर्म समाचार।
असक्तों ह्याचारन् कर्म परमाप्नोंति पुरुषः।।

इससे तू अनासक्त हुआ, निरन्तर कर्त्तव्य कर्म का अच्छी प्रकार आचरण कर, क्योंकि अनासक्त पुरुष निष्काम कर्म करता हुआ परमपद (परमतत्व) को प्राप्त होता है।

संध्यादि कर्म से ब्रह्म लोक

संध्यामुपासते ये तु सततं संशितव्रताः।
विधूत्तपापास्ते यान्ति ब्रह्म लोकमनामयम्।।

जो भक्ति पूर्वक नित्य सदाचार परायण रह कर संध्योपासना करते हैं, वे पापों से मुक्त हुए, शोक दुःख से रहित आनन्द पूर्ण ब्रह्म लोक को प्राप्त होते है।

कर्म से दिव्य दृष्टि

श्री सरयूतीर पर अयोध्या नगरी में प्रजावत्सल, नीतिधर्म और कर्म के जानने वाले तथा विवेकवान् शक्तिवान और बलशाली महाराजा दिलीप सुख पूर्वक राज किया करते थे। वे बड़े ही ज्ञानी, कर्मनिष्ठा वाले, दीर्घ दृष्टि वाले थे। ऐसे समय में लंकापुरी में असुरपति महाबली रावण राज करता था। रात्रि को सोते हुए दशानन को विचार हुआ कि अयोध्यापुरी में इस समय राजा दिलीप राज कर रहा है, इसी वंश में मेरा शत्रु राम उत्पन्न होगा। शत्रु कुल को नाश करना हमारा प्रधान कर्म है, ऐसा निश्चय करते हुए उसी समय राजा दिलीप का वध करने लिए चल पड़ा। अरुणोदय होने से पूर्व अयोध्यापुरी में जा पहुंचा और सरयू के तीर तीर जा रहा था, शीतल सुगंध मंद मंद समीर बह रहा था। दूर से ही भव्य मूर्ति कान्तिमान राजा दिलीप को नित्य कर्म करते हुए देखा और विचार किया कि यह नित्य कर्म से निवृत्त हो जाये तौ मैं इसे मारूं। इस प्रकार विचार करता हुए रावण राजा दिलीप की ओर देखता रहा। सौम्य मूर्ति राजा दिलीप ने तन्मयता से नित्य कर्म करते हुए ही पूर्व दिशा की ओर चार तंडुलों के दानों को अभिमन्त्रित कर फैंक दिया। रावण

तो दिलीप के कर्म को ध्यानपूर्वक देख ही रहा था। जब उससे देखा की राजा ने अक्षतों को अभिमंत्रित कर पूर्व दिशा को फैंका है, तो रावण को संदेह हुआ, क्योंकि रावण भी चारों वेदों का ज्ञाता तथा कर्मकांडी था। राजा दिलीप का कर्म के बीच में ही चावलों के फैंकने का कुछ रहस्य अवश्य ही होना चाहिये, ऐसा विचार कर वह रावण फैंके हुए तंडुलों की दिशा को चल पड़ा। नदी पार होकर वह दूर सघन वन में गया, वहां क्या देखता है कि एक वनराज केसरीसिंह चार बाणों से मरा हुए पड़ा है, रावण उस सिंह को देख कर आगे बढ़ा तो देखता है कि एक गाय घास चर रही है। रावण यह देखकर बड़ा आश्चर्यचकित हुआ कि यहां से इतनी दूर अपना कर्म करते हुए राजा दिलीप ने इस सिंह और गाय को कैसे देख लिया और शेर को मार कर गाय की रक्षा कैसे की, इस वीरवर दीर्घदृष्टि शक्तिमान को अपने नित्य कर्म में तत्पर होते हुए भी बिना किसी कर्म विघ्न के अनायास ही बैठे-बैठे शत्रु का शमन करने में समर्थ एवं कर्म के बीच में तुंडल अभिमंत्रित करने का यह महान् कार्य देख कर रावण को बड़ा विस्मय हुआ और उसने निश्चय किया मैं कभी भी राजा दिलीप से शत्रुता का भाव नहीं रखूंगा। इस प्रकार सामर्थ्यवान राजा दिलीप की प्रशंसा करता हुए रावण अपने राज्य में चला गया।

प्रिय पाठकगण इस उदाहरण का गहन मनन कर प्रयत्न कर लाभ उठावेंगे।

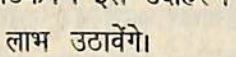

कर्म से शान्ति

युक्तः कर्मफलं त्यक्त्वा शान्तिमाप्नोति नैष्ठिकीम्

कर्मयोगी कर्मों के फल को परमेश्वर में अर्पण करके भगवत्प्राप्तिरूप शान्ति को प्राप्त होता है।

कर्म विषय बहुत गहन और विस्तृत है जैसेः 'गहना कर्मणो गति', कर्मों का मार्ग बहुत गहरा है। कर्म से ही संसार चक्र चल रहा है कर्म के लोप हो जाने पर संसार का लोप हो जाता है, परन्तु संसार के लोप ही जाने पर कर्मों का लोप नहीं होता, बड़ा गहन यदि विषय है।

हे प्रिय पाठकों। नित्य कर्म न करने से कितनी हानि है, और करने से कितना लाभ है, यह आप अच्छी तरह से जान गये होंगे। यदि लाभ व सुख उठाना चाहे तो आप कर्म में तत्पर रहें।

नित्य कर्त्तव्य

प्रातःकाले समुत्थाय भगवन्तं हरि स्मरेत्।
ततो बाह्यक्रिया कृत्वां पश्चात्स्नानादिकं चरेत्।।
ततः संध्यादिक कृत्वा स्वेष्टदेवं च संस्मरेत्।
स्तोत्रं पाठादिकं चापि कृत्वा शास्त्रं ततः पठेत्।।
एतानि कार्याणि कृत्वा ततो गेही सुखि भवेत्।

यज्ञोपवीत धारण की सूक्ष्म विधि

प्रथम नमस्कार, आचमन, प्राणायाम करके विनियोग करें।

विनियोग-

यज्ञोपवीतिमिति मंत्रस्य परमेष्ठीऋषिः, लिङ्गोक्तादेवता, त्रिष्टुपछन्दः, यज्ञोपवीत धारणे विनियोगः।

मंत्र-

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रति पुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।
यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्यत्वा यज्ञोपवीतेनोपह्यामि।।

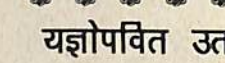

यज्ञोपवित उतारने का मंत्र

उपवीतं भिन्नन्तुं लीर्ण कश्मल दूषितम्।
विसृजामि जले ब्रह्मन् बर्च्चोदीर्घायुरस्ते।।

यज्ञोपवीत को उतार कर जल में प्रवेश करें।

अहरहः संध्यामुपासीत

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु र्गुरुदेवो महेश्वरः।
गुरुःसाक्षात् परंब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।

ॐ नमः शम्भवाय च मयो भवाय च, नम शङ्कराय च।
मयस्कराय च, नमः शिवाय च शिवतराय च।।

प्रातःकाल शौचादि से निवृत्त होकर शुद्धासन पर पूर्वाभिमुख बैठ कर संध्या* आरम्भ करें।

विनियोग -

पृथ्वीति मंत्रस्य, मेरुपृष्ठऋषिः, कूर्मो देवता, सुतलं छंदः, आसने विनियोगः।

विधिः आचमनी में जल लेकर विनियोग पढ़ कर नीचे छोड़ दें, इसी प्रकार आगे सब विनियोगों में ऐसे ही करते रहें।

अर्थ- कृतघ्नतादोष निवारणार्थ, मंत्र के ऋषिः एवं देवता और छन्द का स्मरण पूर्वक जल छोड़ना चाहिये। इस भांति अर्थ आगे भी समझे।

भूःप्रार्थना-

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि ! त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि ! पवित्रं कुरु चासनम्।।

विधिः आचमनी में जल लेकर मंत्र पढ़ उस जल को दक्षिण हाथ में ले बैठक के आसन पर छांट दे।

*अर्थः-*हे भूदेवि ! तुमने सब लोकों को धारण किया है, और तुम विष्णु के द्वारा धारण की गई हो, हे देवि ! तू मुझे धारण करके आसन को पवित्र करें।

* संध्या - दो शब्दों से बना है। एक 'सम्' दूसरा ध्या, सम् का अर्थ अच्छा और ध्या का अर्थ है ध्यान, अर्थात स्वेष्टदेव का अच्छी तरह (एकाग्र मन) से ध्यान किया जाय उसे संध्या कहते हैं।

विनियोग-

अपवित्रः पवित्रो वेत्यस्य, वामदेव ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, विष्णुदेवता, हृदि पवित्र करणे विनियोगः।

शुद्धिः-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

विधि- आचमनी में जल लेकर मंत्र पढ़ उस जल को दक्षिण हाथ की हथेली में लेकर परमात्मा का स्मरण करते हुए शरीर पर छोड़ दें।

अर्थः- अपवित्र अथवा पवित्र हो एवं किसी भी अवस्था में जो पुरुष परमात्मा का स्मरण करता है, वह बाहर भीतर सर्व प्रकार से पवित्र हो जाता हैं

शिखाबंधनं-

चिद्रूपिणि महामाये दिव्य तेजः समन्विते।
तिष्ठ देवि ! शिखाबन्धे तेजो बृद्धिं कुरुष्व मे।।

विधि- इस मंत्र का पढ़कर शिखाबंधन करें।

अर्थ- हे देवि ! दिव्य तेज युक्त चैतन्य रूपा महामाया! शिखा बंधन होने पर (मुझ में) विराजमान होकर मेरे तेज (बल) की वृद्धि करें।

गायत्री मंत्र का स्मरण कर पवित्री धारण करें।

भस्मी अभिमंत्रित करने का मंत्र-

ॐ अग्निरिति भस्म वायुरिति भस्म जलमिति भस्म स्थलमिांत भस्म, व्योमेति भस्म सर्व हवा इदं भस्म, मन एतानि चक्षूंषि भस्मानीति।।

विधि- भस्म को हाथ में लेकर अंगुलियों पर लगाते हुए ऊपर के मंत्र को पढ़ कर अभिमंत्रित करें।

अर्थः- यह भस्म अग्नि, वायु जल, पृथ्वी तथा आकाश स्वरूप है, यही 'भस्म' प्रसिद्ध सर्व व्यापक वस्तु है, यही भस्म मन तथा इन्द्रिय स्वरूप है।

भस्मी धारण

ॐत्र्यायुषं जमदग्नेः (ललाटे) ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं

(ग्रीवायां) ॐ यद्देवेषु न्यायुषं (भुजयोः) ॐ तन्नोऽस्तु न्यायुषं (हृदये)

अर्थः तथा विधिः जमदग्निऋषि की बाल्य यौवन एवं वृद्धावस्था में जो चरित्र बल था वह मुझे प्राप्त होवे। यह कह कर ललाट में तिलक करें। कश्यप ऋषि की तीनों अवस्थाओं का चरित्र बल हमें प्राप्त होवें। यह कह कर गले मे तिलक करें। इन्द्रादि देवताओं की तीनों अवस्था का तेज बल मुझे प्राप्त होव। यह कह कर दोनों भुजाओं में तिलक करें। वह चरित्र बल, तेज जो पूर्वोक्त व्यक्तियों में कहा है, वह हमें प्राप्त होवे यह कह कर हृदय में तिलक करें।

भूतशुद्धिः अपसपन्तु ते भूताः ये भूता ह्यत्र संस्थिताः। ये च स्युर्विघ्नकर्त्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

विधिः केवल एक बार पढ़ें।

अर्थः- जो भूत यहां पर निवास कर रहे हैं, वे दूर हो जावें तथा जो विघ्न करने वाले भूत हैं वे शंकर की आज्ञा से हट जायें।

तीन आचमनः- ॐ अच्युताय नमः स्वाहा, ॐ केशवाय नमः स्वाहा ॐ नारायण नमः स्वाहा।

अर्थ स्पष्ट है।

विधि- मंत्र पढ़कर आचमनी से जल मुख में छोड़े। प्रत्येक आचमन में ऐसा करें।

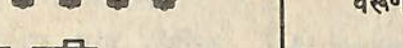

इन्द्रिय अंग शुद्धि

ॐ विष्णुः२, ॐ वाक्२, ॐ प्राणः२, ॐ चक्षुः२, ॐ श्रोत्रम्ः२, ॐ नाभिः, ॐ हृदयं, ॐ कण्ठः, ॐ शिरः, ॐ बाहुभ्यां यशो बलम्।।

विधि- हाथ में जल लेकर मंत्र पढ़ते हुए अंगों को स्पर्श करें। (अर्थ स्पष्ट है)

संकल्प

ॐ तत्सत् - अद्य कायिक, वाचिक तथा मानसिक दोष विनाशार्थं चित्त शुद्धि अर्थ परमेश्वर प्रीति अर्थ प्रातः संध्यांपासनमहं करिष्ये।

विधि- आचमनी में जल लेकर संकल्प पढ़कर छोड दें।

(अर्थ स्पष्ट)

ॐ भूः पुनातु । ॐ भुवः पुनातु। ॐ स्वः पुनातु। ॐ महः पुनातु। ॐ जनः पुनातु। ॐ तपः पुनातु। ॐ सत्यं पुनातु। ॐ भूर्भुवःस्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो न प्रचोदयात् सर्व पुनातु।

विधिः- जल हाथ में लेकर मंत्र पढ़कर चारों ओर छोड़ दें।

अर्थ- भूलोक, भुवलोक, स्वलोक, महलोक, जनःलोक, तपोलोक, सत्यलोक इन सात लोकों के अधिष्ठातृ ओंकार देव हमें पवित्र करें। भूर्लोक, भुवर्लोक अभिष्ठाता तथा उत्पादक परमात्मा के तेज का ध्यान करते है वह तेज हमारी बुद्धि में सत्प्रेरणा करें और पवित्र बनावें।

विनियोग-

ॐकारस्य ब्रह्माऋषिः गायत्री छन्दः, परमात्मा देवता, शुक्लोवर्णः सर्व कर्मारम्भे विनियोगः।

विनियोग-

सप्तव्याहृतीनां विश्वामित्र-गमदग्नि- भरद्वाज- गौतम- अत्रि- वसिष्ठ- कश्यपाऋषियो गायत्री- उष्णिक- अनुष्टुप-वृहती-पंक्ति त्रिष्टुय- जगती छन्दांसि अग्नि- वायु- आदित्य- वृहस्पति- वरूण- इन्द्र- विश्वेदेवा देवताः अनादिष्ट प्रायश्चिते प्राणायामे विनियोगः।

अर्थः अन्य अर्थ स्पष्ट है, अनादिष्ट प्रायश्चिते-सामान्य प्रायश्चित के रूप में प्राणायाम करने के लिये विनियोग है।

विनियोग-

गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिः, गायत्री छन्दः, सविता देवता अग्निर्मुखमुपनयने प्राणायामे विनियोगः। विनियोग-शिरसः प्रजापतिऋर्षिः, त्रिपदा गायत्री छन्दः ब्रह्माग्निवायु सूयदिवताः यजुः प्राणायामे विनियोगः।

प्राणायाम-मंत्रः

ॐ भूः ॐ भुव ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं ॐ तत्सवितुवरेणयं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ आपो ज्योति रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्।

विधिः सद्गुरु महाराज जी से सीखकर अलभ्य लाभ को प्राप्त करें।

अर्थः ब्रह्म सत्, चित्त, आनन्द स्वरूप तथा पुज्यनीय सर्वोत्पादक तेजस्वरूप व सर्व आधारित एक रस है। उस हिरणयगर्भ अर्थात व्यापक परमेश्वर के श्रेष्ठ तेज का हम ध्यान करते है। जो हमारी बुद्धियों को धर्म-अर्थ-काम मोक्ष के मार्ग में प्रवृत्त करें। जो परमेश्वर सब को व्याप्त होकर जल के समान स्थित है, जो प्रकाशस्वरूप है, जो रस अर्थात् आनन्द स्वरूप होने से अमृत स्वरूप है अर्थात् प्रत्येक को अमर बनाने की शक्ति रखाने वाला है, ऐसा सच्चिदानन्द स्वरूप का वाचक ॐकार ब्रह्मस्वरूप ही है।

जल प्रार्थना -

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शं योरभिस्त्रवन्तु नः।

विधिः आचमनी में जल लेकर मंत्र पढ़ उस जल को दक्षिण हाथ में लेकर शरीर पर छिड़के।

अर्थः ये दिव्य जल हमारे अभीष्ट कल्याण को करने वाला होवे, तथा हमारे पीने के लिए कल्याण करने वाला बने एवं ये जल हमारे अभिषेक समय कल्याण बढ़ाने वाले होवें।

प्रातः का विनियोगः

सूर्यश्चमेति ब्रह्माऋषिः प्रकृतिश्चछन्दः, सूर्यो देवता, अम्बु प्राशने विनियोगः।

प्रातः का आचमनः

ॐसूर्यश्च मा मन्युश्च मन्यपतयश्च मन्यु कृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ता यद्रात्र्या पापमकार्षम्। मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्नारात्रिस्तदवलुम्पतु। यत्किंचित दुरितं मयि इदमहं माममृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा।

अर्थः सूर्य, मन्यु और मन्यु के अधिष्ठात् देवता क्रोध जन्य पापों से रक्षा करें। जो पाप मैंने रात्रि में मन, वचन, हाथ, पांव, उदर, शिश्न के द्वारा किये हैं रात्रि अधिष्ठात देवता उनका नाश करें। इसके अतिरिक्त जो कोई पाप मेरे भीतर है उसे मैं इस अमृत के उत्पन्न करने वाले तेजस्वी सूर्य के प्रकाश में हवन करने के लिए निमित्त, आहूती के रूप में अर्पण करता हूं। (नीचे का विनियोग तथा आचमन मध्यान्ह् समय का है।)

मध्यान्ह् का आचमनः

ॐआपः पुनन्तु पृथिवीं, पृथिवीपूता पुनातु माम्। पुनन्तु ब्रह्मणस्पति ब्रह्मपूता पुनातु माम्। यदुच्छिष्टमभोज्यं यद्वा दुश्चरितं मम सर्व पुनन्तु मामापोसतां च प्रतिग्रहं स्वाहा।

अर्थः जल पृथ्वी को पवित्र करें, और पवित्र पृथ्वी मुझे पवित्र करें। हिरणगर्भ के स्वामी पृथ्वी को पवित्र करे और हिरण्यगर्भ के स्वामी द्वारा पवित्र पृथ्वी मुझे पवित्र करे, मेरे द्वारा जो उच्छिष्ट अथवा अभक्ष्य भोजन तथा बुरा आचरण हुआ है, तथा जो असत प्रतिग्रह हुआ हो उन सब पापों से यह जल मुझे पवित्र करे। (नीचे का विनियोग तथा आचमन सायं समय का है।)

सायं का विनियोग-

अग्निश्चमेति रुद्रऋषिः अग्निर्देवता प्रकृतिश्छन्दः, अम्बु प्राशने विनियोगः।

सायं का आचमनः

ॐ अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्योरक्षन्तां यदह्नपापष्कार्षम्। मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना अहस्तदवलुम्पतु। यत्किंचित दुरितं मयि इदमहं माममृतयोनौ सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा।

अर्थः इस मंत्र का अर्थ पूर्वोक्त के समान है, सूर्य के स्थान में यहां अग्नि देवता है, तथा रात्रि के स्थान में दिन है, अहः शब्द का अर्थ दिवस है।

विनियोगः

आपो हिष्ठेति त्रि ऋचस्य सिंधु द्वीप ऋषिः, गायत्री छन्दः आपो देवता, मार्जने विनियोगः।

मार्जन मंत्रः

ॐ आपो हिष्ठा मयो भुवः। ॐ ता न उर्जे दधात न। ॐ महेरणाय चक्षसे। ॐ यो वः शिवतमो रसः। ॐ तस्य भाजयते हनः। ॐ उशतीरिव मातरः। ॐ तमसा अरङ्गमान वः। ॐ यस्य क्षयायजिन्वथः। ॐ आपो जनयथा च नः।

विधिः तीन कुशा से शरीर पर मार्जन करें, कुशा के अभाव में तीन अंगुलियों से करें।

अर्थः हे जल देवता ! आप निश्चय ही हमको आनन्द देने वाले हो ! यह जल हमको बल पुष्टि, विद्या एवं अभ्युदय के सपादन करने के लिए समर्थ करें, एवं महा रमणीय पर ब्रह्म साक्षात्कार करने योग्य बनायें, हे जल देव ! आप का अत्यन्त कल्याणकारी जो पवित्र रस है। हमको इस लोक में उस रस का उपभोक्ता बनायें। अपने पुत्रों के कल्याण की चाहना करने वाली माताओं के समान आप हमारे कल्याण की कामना करें। हे देव ! तुम्हारे उस सुखद दिव्य रस से सदा हम पुष्टि एवं तृप्ति प्राप्त करें। जिस संसार के आधार रूप रस से तुम जगत को तृप्त एवं प्रसन्न करते हो। हे जल देवता ! उस रस के द्वारा हमें अर्थ काम एवं मोक्ष रूप चतुर्विध पुरुषार्थ के सम्पादन करने के लिये शक्तिमान बनायें।

विनियोगः

द्रुपदा दिवेत्यस्य कोकिलो राजपुत्र ऋषि, अनुष्ठप् छन्दः, आपो देवता, अघर्मपणे विनियोगः।

अघमर्षणाः ॐद्रुपदादिव मुमुचानः स्विनः स्नातो मलादिव। पूतं पवित्रेणेवाजयमापः शुन्धन्तु मैनसः।

विधिः हथेली में जल ले मंत्र पढ़ नासिका से सूंघ कर बायीं ओर फैंक दें।

अर्थः जिस प्रकार पादुका से अलग की हुई धूली फिर उससे दूर ही रहती है, उस प्रकार हे जल देव ! मुझे पापकर्मो से दूर ही रखें, जिस प्रकार पसीने वाला मनुष्य स्नान के द्वारा शुद्ध हो जाता है, या जिस प्रकार धृत पवित्र वस्त्र से छानने पर शुद्ध हो जाता है, तद्वत् हे जल देवता ! मुझे पापों से मुक्त करके पवित्र बनायें।

विनियोगः

अन्तश्चरसीति तिरश्चीनऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, आपो देवता, अम्बु प्राशने विनियोगः।

आचमन ॐ अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतो मुखः। त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योति रसोऽमृतम।।

अर्थः आप प्राणि मात्र के भीतर विचरण करते है, सर्व व्यापक होकर आप बुद्धि में स्फुरण होते है, आप यज्ञ हो, आप वषट्कार हैं एवं जल सच्चिानन्द स्वरूप हैं

सूर्यार्घ्यः

ॐ एहि सूर्य सहस्त्रांशो तेजो राशे जगत्पते। अनुकम्पय मां भक्तया गृहाणार्घ्य दिवाकर।।

विधिः सूर्य को जलार्घ्य प्रदान करें, बाद में पुष्प, चन्दन चढ़ावे।

अर्थः हे सहस्त्र किरण तेजस्वी जगत के स्वामी भगवान सूर्य पधारिये। भक्ति द्वारा मुझ पर दया करते हुए हे दिवाकर अर्घ्य ग्रहण कीजिये।

वन्दना-

ॐ आदिदेव ! नमस्तुभ्यं प्रसीद मम भास्कर। दिवाकर ! नमस्तुभ्यं प्रभाकर ! नमोऽस्तु ते।।

अर्थः हे आदिदेव ! प्रकाश फैलाने वाले ! आपको नमस्कार है। मुझ पर प्रसन्न होइये। हे दिन बनाने वाले ! आपको नमस्कार है, क्रांति को बढाने वाले आपको नमस्कार है।

विनियोग-

उद्वयमित्यस्य प्रस्कणवऋषि, अनुष्टुप्छन्दः, सूर्यो देवता, सूयोपस्थाने विनियोगः।

विनियोग-

उदुयमिति प्रस्कणवऋषि, गायत्री छन्दः, सूर्यो देवता, सूर्योपस्थाने विनियोगः।

विनियोग-

चित्रमित्यस्य कौत्स ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

विनियोग-

तच्चक्षुरिति दध्यड्डाथर्वण ऋषिः अक्षरातीत पुर, उष्णिक्छन्दः, सूर्योदेवता, सूर्योपस्थाने विनियोगः।

सूर्योपस्थान-

ॐ उद्वयं तमसस्परिस्वः पश्यन्त उत्तरम्, देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।।

ॐ उदुत्यं जातिवेदसं देवं वहन्ति केतवः*
चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः आग्राद्यावाथुथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्माजगतस्तस्थुषश्च।।

ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुकमुच्चरत्, पश्येम शरदः शतं, जीवेम शरदः शतः श्रृणुयाम शरदः शत। प्रब्रवाम शरदः शतं-अदीनाः स्याम शरदः शतः भूयश्च शरदः शतात्।।

विधिः अन्जली बांध कर मन्द मन्द स्वर से मंत्रोचार करें।

अर्थ- हे सूर्य देव ! हम अज्ञानान्धकार से रहित हो जायं, सर्वोत्तम पूर्ण विशुद्ध आनन्द का सदा हम अनुभव करें और देव लोक मोक्ष धाम में अवस्थित होकर आप अन्तरात्मा सूर्य के उत्तम शांत दिव्य ज्योति को प्राप्त करें। हे भगवान् ! सदाचार श्रद्धालु जनों की बुद्धि को पवित्र करती हुई आपकी तेजोमयी किरणें समस्त विश्व दर्शन के लिए आपका वहन करती हुई चलती रहती है। हे सूर्यनारायण ! बड़े आश्चर्य के साथ आप के

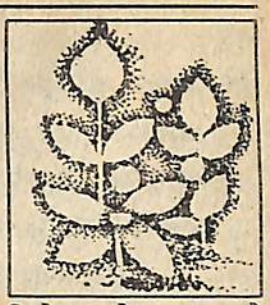

स्वयं प्रकाश ज्योति का अवलम्बन लेकर चक्षुरादि इन्द्रिय के अनुग्राहक देवों का समुदाय उदित हो रहा है आप चक्षु अनुग्राहक मित्रदेवता के, रसाना अनुग्राहक वरुण देवता एव वाणी अनुग्राहक अग्निदेवता के प्रकाशक हैं आपने स्वर्ग, पृथ्वी एवं अन्तरिक्षरुप त्रिलोकी को व्याप्त किया है, अतः आप स्थावर जगमरूप विश्व के आत्मा हैं। वह जगत का प्रकाशक दैवी सम्पति वाले भद्र मनुष्यों का हितकारी आदित्य मण्डलावस्थित शुद्ध ब्रह्मज्योति पूर्व दिशा में उदित हुआ है। उसकी कृपा से हम सौ वर्ष पर्यन्त देखें, सौ वर्ष पर्यन्त जीवित रहें, सौ वर्ष तक सुने, सौ वर्ष तक बोलें, सौ वर्ष तक दीनता से रहित प्रसन्न सुखी बने रहें, तथा सौ वर्ष से भी अधिक जीवित रहें।

करन्यासः-

ॐभूः अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐभुवः तर्जनीभ्यां नमः। ॐ स्वः मध्यमाभ्यां नमः। ॐ तत्सवितुर्वरेणयं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ भर्गो देवस्य धीमहि कनिष्टिकाभ्यां नमः। ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।

अर्थ- स्पष्ट। *विधि-* अंगुष्ट से अंगुलियों का स्पर्श करें।

अंगन्यास-

ॐ भूः हृदयाय नमः। ॐ भुवः शिरसे स्वाहा। ॐ स्वः शिखायै वषट्। ॐ तत्वितुर्वरेण्यं कवचाय हुँ। ॐ भर्गो देवस्य धीमहि नेत्र त्रयाय वौषट्। ॐ धियो यो नः प्रचोद्यात् अस्त्रायफट्।

अर्थ- स्पष्ट। *विधि-* उक्त अंगों का हाथ से स्पर्श करें।

गायत्री शाप विमोचनम्

विनियोग-

अस्यश्रीब्रह्मशापविमोचनमंत्रस्य ब्रह्माऋषिः। भुक्ति मुक्ति प्रदा ब्रह्मशाप विमोचनी गायत्रीशक्तिदेवता। गायत्रीछन्दः, ब्रह्मशापविमोचनार्थे जपे विनियोग।

* दृशे विश्वाय सूर्यम्।
ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं

मंत्र-

ॐ गायत्री ब्रह्मेत्युपासीत यद्रुपं ब्रह्म विदो विदुःतां पश्यन्ति धीराः सुमनसा वाचामग्रतः ॐ वेदान्तनाथय विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात्। ॐ देवि गायत्रि ! त्वं ब्रह्मशापाद् विमुक्ता भव ।।

विधिः केवल मंत्र का उच्चारण करें। आगे भी ऐसा ही समझ कर करें।

अर्थः स्तुति करने वालों को त्राण करने वाली ब्रह्मरुपी गायत्री देवी की उपासना करनी चाहिये। उस ब्रह्मरूपी गायत्री देवी का परमार्थ स्वरुप क्या है यह बात ब्रह्म-ज्ञानी ही जानते है, और वाणी से परे उस ब्रह्मरूपी गायत्री को धीर सज्जन महापुरुष विशुद्ध अन्तःकरण से ही समझ सकते हैं वेदान्त के अधिष्ठाता ब्रह्मा के द्वारा हम लोग समझते हैं, तथा हिरणगर्भ उस ब्रह्मा का हम लोग ध्यान करते हैं। वे हमारी बुद्धि के अन्दर प्रविष्ट होकर सत्प्रेरणा करें। हे देवी गायत्री। आप ब्रह्मशाप से मुक्त हों।

विनियोग-

अस्य श्रीवसिष्ठशाप विमोचन मंत्रस्य निग्रहानुग्रहकर्त्ता वसिष्ठ ऋषिः। वसिष्ठानुगृहीता गायत्री शक्ति देवता, विश्वोद्भवा गायत्री छन्दः, वसिष्ठशाप विमोचनार्थे जपे विनियोगः

मंत्र-

ॐसोऽहमर्कमयं ज्योतिरात्म ज्योतिरहं शिवः। आत्म ज्योति रहं शुक्रः सर्वज्योति रसोस्म्यहम्। इत्युक्त्वा योनिमुद्रां प्रदर्शय गायत्री त्रयं, ॐ देवि! गायत्री ! त्वं वसिष्ठाशापाद् विमुक्ता भव।

अर्थ- वह मैं सूर्यमय प्रकाश स्वरूप हूं, मैं आत्म प्रकाशमय कल्याण स्वरुप हूं। आत्म प्रकाश रूप मैं सर्वकर्त्ता हूं, सर्व प्रकाश आनन्द रूप मैं हूं। (ऊपर का मंत्र पढ़कर योनिमुद्रा दिखाकर तीन बार गायत्री पढ़कर) हे देवि गायत्री ! आप वसिष्ठ शाप से मुक्त हो।

विनियोग-

अस्य श्री विश्वमामित्रशाप विमोचन मत्रस्य नूतन सृष्टिकर्त्ता विश्वामित्रः, विश्वामित्रनुगृहीता गायत्री शक्ति र्देवता। वागूदेहा गायत्री छन्दः, विश्वामित्राशाप विमोचनार्थे जपे विनियोगः।

मंत्र-

ॐ गायत्री भजाम्यग्निमुखीं विश्वगर्भा यदुद्भवाः। देवाश्चक्रिरे विश्वसृष्टि तां कल्याणीमिष्टकरी प्रपद्ये। यन्मुखान्निः सृतोऽखिल वेद गर्भः।

अर्थ- अग्निमय मुख वाली संसार का आधारभूत गायत्री का भजन करता हूं, जिससे उत्पन्न होने वाले देवता संसार को उत्पन्न करते है, उस कल्याणकारिणी गायत्री के शरण जाता हूं जिस के मुख से संम्पूर्ण वेदों का सार निकलता है।

शाप युक्ता तु गायत्री सफला न कदाचन। शापादुत्तारिता सातु भुक्ति मुक्ति फलप्रद।।

अर्थ- शाप युक्त गायत्री कभी भी फलप्रद नहीं होती है। किन्तु शाप विमुक्त गायत्री जो है वह भोग तथा मोक्ष दोनों फलों को देने वाली है।

गायत्री वन्दना

ॐ अहो देवि ! महादेवि ! संध्ये ! विद्ये ! सरस्वती! अजरे ! अमरे ! चैव ब्रह्मयोनि ! नमोऽस्तुते ।

अर्थ- हे देवि ! हे महादेवि ! हे संध्या ! हे विद्या! हे सरस्वती ! हे कभी वृद्ध न होने वाली ! हे वेद माता तुम्हे नमस्कार है।

ब्रह्मशापाद् विमुक्ता भव। वसिष्ठशापाद् विमुक्ता भव। विश्वामित्रशापाद् विमुक्ता भव।।

विधिः हाथ जोड़ कर बोले।

अर्थ- हे देवि गायत्री ! ब्रह्मशाप से वसिष्ठशाप से और विश्वमामित्र शाप से मुक्त हो।

ॐ गायत्रीं त्र्यक्षरां वालां साक्ष सूत्र कमण्डलुम्। रक्तांगी रक्तवस्त्रां च रक्तमाल्यानुलेपनाम्।।

चतुर्भुजां चर्तुर्वक्त्रां हंसवाहन संस्थिताम्।
ऋग वेदस्य कुतोत्संगां सर्वदेव नमस्कृताम्।।
ब्राह्मणीं ब्रह्मदैवत्यां ब्रह्मलोक निवासिनीम्।
आवाहयाम्यहं देवी मायान्तीं सूर्यमण्डलात्।।
आगच्छ वरदे देवि ! व्यक्षरे ब्रह्मवादिनि।
गायत्रि छन्दसां मात ब्रह्मयोनि र्नमोऽस्तु ते।।

अर्थ- मैं तीन अक्षर वाली बाल्यावस्था धारण करने वाली रुद्राक्ष माल धारण किये हुए कमण्डलु धारण किये हुए, लाल शरीर और लाल वस्त्र, लाल माला एवं लाल उबटन लगाये हुए, चार भुज, चार मुख धारण किये हुए तथा हंस पर बैठी हुई और ऋग्वेद को गोद में लिये हुए तथा सम्पूर्ण देवताओं से वन्दित ब्रह्माणी, ब्रह्म हे देवता जिसका ऐसी तथा ब्रह्मलोक में निवास करने वाली एवं सूर्य मण्डल से आती हुए गायत्री देवी का आव्हान् करता हूं। हे वरदान देनी वाली देवी पधारिये, हे त्र्यक्षर स्वरूपा हे ब्रह्मवादिनि ! हे वेद माता गायत्री ! आपको नमस्कार है।

विनियोग-

तेजोऽसीति देवा ऋषयो गायत्रीछन्दः।
शुक्रं दैवतं गायत्र्यावाहने विनियोगः।।

आव्हान्-

ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्य मृतमसि, धामनामासि।
प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि।।

विधि- अंजली बांध कर आव्हान् करें।

अर्थ- हे गायत्रि ! तुम तेज रूप हो, निर्मल प्रकाश रूप हो, अमृत मोक्ष रूप हो, चित्त वृत्तियों के विरोध का प्रधान स्थान हो, देवों की प्रिय हो देव पूजन का सर्वोत्तम साधन रूप हो।

विनियोग-

तुरीयपदस्य विमल ऋषिः, परमात्मा देवता, गायत्री छन्दः, गायत्र्युपस्थाने विनियोगः।

ध्यान-

ॐ गायत्र्यस्येक पदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद
पद्यसि। नहि पद्यसे नमस्ते तुरीयाय दर्शिताय
पदाय परोरजसे सावदोमाग्रापत्।

अर्थ- हे गायत्रि ! तुम त्रिभुवन रूप प्रथम चरण एक पद हो। ऋक्, यजुः एवं सामरूप द्वितीय चरण से द्विपदी हो। प्राण अपान तथा व्यान रूप तृतीय चरण से त्रिपदी हो और तुरीय ब्रह्म रूप चतुर्थ चरण से चतुष्पदी हो। निर्गुण स्वरूप से अचिन्त्य होने के कारण तुम 'अपद' हो अतएव मन बुद्धि के अगोचर होने से तुम सब के लिये प्राप्य नहीं हो। तुम्हारे दर्शनीय (अनुभव करने योग्य) चतुर्थ पद को, जो प्रपंच से परे वर्त्तमान शुद्ध पर ब्रह्म स्वरूप को नमस्कार है। तुम्हारी प्राप्ति में विघ्न डालने वाले वे राग, द्वेष, काम, क्रोधादि रूप पाप मेरे पास न पहुंच सकें अर्थात् परब्रह्म स्वरूपिणी तुमको मैं निर्विघ्न प्राप्त करूं।

२४ मुद्रा- सुमुखं सम्पुटं चैव विततं विस्तृतन्तथा।
द्विमुखं त्रिमुखं चैव चतुः पन्च मुखं तथा।।
षण् मुखाऽधोमुखं व्यापकाजलिकं तथा।
शकटं यम पाशं ग्रथितं चोन्मुखोन्मुखम्।।
प्रलम्बं मुष्टिकं चैव मत्स्यः कूर्मो वराहकम्।
सिंहाक्रांतं महाक्रान्तं मुद्गर। पल्लवं तथा।।

अर्थ तथा विधि- किसी शिक्षक व गुरू द्वारा सीखकर करें।

विनियोग-

प्रणवस्य ब्रह्मऋषिः, परमात्मा देवता, गायत्री छन्दः।
व्याहृतीनां प्रजापतिऋर्षिः, अग्निवयुसूर्या देवताः
गायत्री छन्दः सविता देवता, सर्वपापक्षयार्थे गायत्री
मंत्र जपे विनियोगः।

गायत्री मंत्र-

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुवरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात्।। *

अर्थ- हम उस परमात्मा देव के वरणीय (चाहने वाले) भर्गः (चैतन्य ज्योति) का ध्यान करते हैं। जो परमात्मा समस्त विश्व के प्रसवकर्त्ता हैं उसी से उन्हे सविता कहते हैं एवं जो सर्वत्र सदा स्वयं प्रकाशमान हैं इसी से उन्हें

* मंत्र जाप मन में करें, यही सर्वोत्तम है।

देव कहते हैं, वह भर्ग हमारी बुद्धि वृत्तियों को धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष रूप चतुर्विध पुरुषार्थो के सिद्धि की ओर प्रेरित करें।

८ *मुद्रा-*

सुरर्भिज्ञान वैराग्यं योनिः शंखोथ पंकजम् लिड्गं
निर्वाण कं चैव जपान्तेऽष्टौ प्रदर्शयेतृ।

विधि- पूर्ववत्।

प्रदक्षिण ॐ विश्वश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो
विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्। सम्बाहुभ्यां धमति
सम्पतत्रैद्यावाभूमी जनयन्देव एकः।

अर्थ- हे विभो ! सर्वत्र नेत्र वाले ! सर्वत्र मुख वाले! सर्वत्र बाहु वाले ! सर्वत्र पैर वाले ! आप अपने धर्म अधर्म रूप हाथों से तथा पंचभूतात्मक पावों से संसार को चला रहे हैं तथा पृथ्वी और आकाश के निर्माता होते हुए भी अद्वितीय हो।

क्षमा प्रार्थना-

यदक्षरं पदभ्रष्टं मात्राहीनं तु यद्भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव ! प्रसीद परमेश्वर

अर्थ- हे देव ! हे परमेश्वर ! इस संध्या जनित कर्म में जो अक्षर भ्रष्ट तथा जो पदभ्रष्ट अथवा मात्रा हीन दोष युक्त हो उसको क्षमा करके मुझ पर प्रसन्न होवो।

समर्पणम्- अनेन प्रातः संध्योपासनाख्येन कर्मणा।
श्री भगवान् ब्रह्मस्वरूपी परमेश्वरः प्रीयताम्।।

अर्थ- इस प्रातः संध्योपासना रूपी कर्म के द्वारा श्री भगवान् ब्रह्म स्वरूपी परमेश्वर प्रसन्न होवें।

ॐ तत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु

अर्थ- सच्चिनानंद परब्रह्म के अर्पण हो। इति।।

सूचना

वेदांग ज्योति (मासिक) के पुराने अंक आधा मूल्य में देय है, इच्छुक प्रार्थी M.O. द्वारा राशि भेजकर डाक द्वारा मंगवा सकते है। रजिस्टर्ड डाक से मंगवाने पर पन्द्रह रूपये अलग से भेजने होंगे।

* * * * * * * *

पाठकों ! आपको वर्षों से वेदांग ज्योति जिस पते पर भेजी जा रही है, उस पर आपका सदस्यता नम्बर लिखा है। यदि आप आपके पते में कोई परिवर्तन हुआ हैं तो पत्र द्वारा सूचित करें। यदि आपको सदस्य नहीं रहना है तो भी सूचित करें।

प्रबंधक

लधु विज्ञापन

* डाक टिकिट साईज फोटो बनवायें
* अमेरिकन स्टाईल नाम पते के रंग बिरंगे आकर्षक स्टीकर बनावायें

मूल्य सूची + सेम्पल 7 रू. के डाक टिकटों द्वारा सम्पर्क करें:—

शर्मा एजेंसीज

1282/13 गली राममन्दिर,
नमक मण्डी, अमृतसर—143006
(पंजाब) ✆ 557200

हवन की विशेषता

यह मनुष्य जन्म, मरण के शाश्वत दुःख के अत्यन्त लय करने का एक मात्र साधन है। सिद्धवेकी महापुरुषों ने इस जीवन के अन्तिम ध्येय की प्राप्ति के लिए मन्द गति के मानवों को भी इस मार्ग में निर्बाध चलने तथा अपने चरम लक्ष्य को प्राप्त करने के निमित्त नित्य नैमितक कर्म मार्ग का दिग्दर्शन कराया है। उन नित्य कृत्यों में संध्या वन्दन तथा नित्य हवन लौकिक तथा पारलौकिक दोनों प्रकार के अभ्युदय को एक साथ करता है और पिपीलिका मार्ग से शनैः शनैः मनुष्य की अनायास चरम लक्ष्य पहुंचाने में कारगर बनाता है।

यथा गीता में श्रीकृष्ण भगवान अर्जुन के प्रति यज्ञ के विषय में कहते हैं कि:

सहयज्ञाः प्रजाः सृष्टा पुरोवाच प्रजापतिः।
अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्तिवष्टकामधुक्।।

ब्रह्मा ने कल्प के आदि में यज्ञ सहित प्रजा को रच कर कहा कि इस यज्ञ के द्वारा तुम लोक वृद्धि को प्राप्त होवो और यह यज्ञ तुम लोगों को इच्छित कामनाओं को देने वाला होवे।

तथा च

यज्ञशिष्टामृतभुजो यान्ति ब्रह्म सनातनम्।
नायं लोकोऽस्त्ययज्ञस्य कुतोऽन्यः कुरुसत्तम।।

हे कुरु श्रेष्ठ ! यज्ञों के परिणाम रूप ज्ञानामृत को भोगने वाले योगीजन सनातन परब्रह्म परमात्मा को प्राप्त होते हैं और यज्ञ रहित पुरुष को यह मनुष्य लोक भी सुखदायक नहीं है, फिर परलोक कैसे सुखदायक होगा।

नित्य प्रति घर में हवन करने से घर का तथा अन्य का वायु मण्डल शुद्ध रहता है और असाध्य कार्य भी इसी ही हवन के द्वारा सिद्ध हो जाते है। शारीरिक व्याधियां एवं विघ्नों की निवृत्ति तथा दारिद्रयता दुःख भी इस ही से सदा के लिये शमन हो जाते हैं। अरि नाश तथा भावी आपत्तियां भी इसी ही से निवृत्त हो जाती हैं। नाना प्रकार के किये हुए पापों को हवन द्वारा भस्म किया जा सकता हैं निरन्तर अग्नि होत्रादि करने से मनुष्य विधूतमय निर्मल मतिवान हो जाता है। अग्निहोत्र की महा विलक्षण महिमा मनुष्य आचरण करके ही समझ सकेगा। अतः प्रत्येक प्राणी को लिखे अनुसार व अन्य इष्ट मन्त्रों से नित्य करना चाहिये।

हवन सामग्री

तिल ४ छटांक, यव २ छटांक, तंडुल १ छटांक, शर्करा १ छटांक, सुगन्ध पदार्थ- कपूर, केसर, कपूर काचरी छोटी, गुगुल लाल, चन्दन चूरा, मिश्रित हवन पुड़ा आदि एक छटांक।

पंच मेवा- बादाम, पिस्ता, छुहारा, खोपरा, किशमिश एक छटांक, घृत यथा शक्ति

उपरोक्त सामग्री इक्टठी कर नित्य यथा शक्ति हवन में काम में लायी जाय।

नित्य हवन विधि

नमस्कार -

ॐ नमः शम्भवाय च मयो भवाय च, नमः शंकराय च मयस्कराय च, नमः शिवाय च शिव तराय च।।

संकल्प-

ॐ तत्सत् - अद्य कायिक, वाचिक तथा मानसिक दोष विनाशार्थ चित्त शुद्धि - अर्थ परमेश्वर प्रीति- अर्थ प्रातर्होममहं करिष्ये।

प्राणायाम मंत्र-

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं ॐ तत्सवितुर्वरेणयं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ आपो ज्योति रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्।

आचमन-

ॐ भूः स्वाहाः, ॐ भुवः स्वाहा, ॐ स्वः स्वाहाः।।

तदनन्तर ताम्रपात्र में अग्नि को स्थापन कर आव्हान करें।

आव्हान-

ॐ अग्निदूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे देवान् आसादयादिह।

हव्य को वहन करने वाले देवों के दूत रूप अग्निदेव को आगे स्थापना करके प्रार्थना करता हूं कि हे अग्निदेव कृपया आप सम्पूर्ण देवताओं को यहां पहुंचाने का अनुग्रह करें।

प्रणाम-

ॐ अग्निप्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्। हिरण्यवर्णमनलं समृद्ध विश्वतो मुखम्।।

सुवर्ण के समान कांति वाले समृद्धशाली सर्वत्र मुख वाले प्रज्जवलित अग्निदेव को मैं प्रणाम करता हूं।

अग्नि का ध्यान -

ॐ चत्वारि श्रृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्ता सो अस्य। त्रिधा बद्धो वृषयो रोरवीति महो देवो मर्त्या आविवेश।

हम उस अग्निदेव का ध्यान करते है जो वृषभ (अभीष्ट फल को वर्षण करने वाला) है जाग्रत, स्वप्न, सुषुसि और तुर्या ये चार इसके सींग हैं, सत्व, रज और तम ये तीन इसके पांव है, चित् और अचित् ये इसके दो सिर हैं और इसके सत्ता, कल्पना, आनन्द, महत्व, प्रजनन, तेज और सत्य ये सात हाथ हैं। यह स्थूल सूक्ष्म और कारण शरीरों से बंधा है यह अभौतिक, आत्मिक बल का सिंचन करंता है, स्फरण शब्द का करने वाला वह आत्मा महान देव मनुष्यों में प्रविष्ठ होवे। यथा लब्धेपचारों से अग्नि का 'ॐ पावकात्मने नमः' इस मंत्र से पूजन कर दर्भ से अग्नि कुण्ड का परिस्तरण करे, दर्भाभाव से जल से ही परिस्तरण करना चाहिये। बाद तर्जनी और कनिष्टिका को अलग कर आहूती देवें।

ॐ भूः स्वाहा, इदमग्नये न मम। ॐ भुवः स्वाहा, इद्र वायवे न मम। ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय न मम। ॐ अग्ने स्वाहा, इदमग्नये न मम। ॐ धन्वन्तरये स्वाहा, इदं धन्वन्तरये न मम। ॐ विश्वेभयोदेवेभ्यः स्वाहा इदं विश्वेभ्योदेवेभ्यो न मम। ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजातपये न मम। ॐ अग्ने स्विष्टकृते स्वाहा, इदं मग्नये स्विष्टकृते न मम।

उत्तम अभिष्ट वस्तु प्रदान करने वाले अग्निदेव के निमित्त यह आहूती अर्पण करता हूं, मेरे लिए नही।

ॐ पाहिनो अग्न एनसे स्वाहा, ॐ पाहिनो विश्व वेदसे स्वाहा, ॐ यज्ञं पाहि विभावसो स्वाहा, ॐ सर्व पाहि शतक्रतो स्वाहा।

ॐ यामृषभो भूतकृतो मेधा मेधाविनो विदुः। तया मामद्य मेधगयाग्ने मेधाविनं कृणु, स्वाहा।।

हे अग्ने ! जिस बुद्धि को ज्ञानी और प्रयत्नशील ऋषि

अनुभव करते हैं, आज उस बुद्धि से मुझे बुद्धिमान करो।

ॐ अग्ने नय सुपथाराये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। ययोध्यस्मज्जुहुराण्मेनो भूयिष्ठां ते नम उक्ति विधेम।।

हे अग्नि देवता ! हमें परमेश्वर की सेवा में पहुंचाने के लिए सौम्य पथ से ले चलिये, हे देव ! आप हमारे सम्पूर्ण कर्मो को जानने वाले हैं, इसलिए हमारे इस मार्ग के प्रतिबन्धक पापों को दूर कीजिये, आपको बारम्बार हम नमस्कार करते हैं।

ॐ देवकृतस्यैनसाऽवयजनमसि स्वाहा, इदमग्नये न मम।

देव विषयक पापों का विनाश हो तदर्थ अग्नि को यह आहूती अर्पण करता हूं, मेरे लिए नहीं।

ॐ मनुष्यकृतस्यैननसोऽवयजनमसि स्वाहा, इदमग्नये न मम।

मनुष्य के विषय में किये पाप का विनाश हो उसके निमित्त यह आहूती अग्नि में अर्पण करता हूं, मेरे लिए नहीं।

ॐ पितृकृतस्यैनसोऽवजनमसि स्वाहा, इदमग्नये न मम।

पितरों के विषय में किये गये पाप का विनाश हो उसके निमित्त यह आहूती अग्नि में अर्पण करता हूं, मेरे लिए नहीं।

ॐ आत्मकृतस्यैनसोऽवयजनमसि स्वाहा, इनमग्नये न मम।

आत्मा के विषय में किये गये पाप का विनाश होवे तदर्थ यह आहूती अग्नि में अर्पण करता हूं, मेरे लिए नहीं।

ॐ एनस एनसोऽवयजन मसि स्वाहा, इदमग्ने न मम।

पापों के विषय में किया हुआ पाप का नाश हो तदर्थ यह आहूती अग्नि में अर्पण करता हूं, मेरे लिए नहीं।

ॐ यच्चाहमेनो विद्वांश्चकार यच्चाविद्वान् तस्य सर्वस्यैवसोऽवयजनमसि स्वाहा, इदमग्नये न मम।

मैंने जिस पाप को समझ कर किया है और जिसको बिना समझे किया है उसका विनाश हो, इसलिये आहूती अग्नि को समर्पण करता हूं, मेरे लिए नहीं।

ॐ पृथ्व्यप्तेजो वायूवाकाशाः मे शुद्धयन्ताम्। ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासं स्वाहा।

मेरे पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश शुद्ध होवें मैं प्रकाश स्वरूप होकर रजोगुण से रहित निष्पाप बनूं तदर्थ यह आहूती अग्नि को अर्पण करता हूं।

ॐ प्राणापानव्यानोंदानसमानाः में शुद्धयन्ताम् । ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासं स्वाहा।

मेरे प्राण अपान, व्यान, उदान, समान नाम के पांचों प्राण पवित्र होवे। मैं ज्योति स्वरूप रजोगुण रहित निष्पाप बनूं तदर्थ यह आहूती अग्नि के अर्पण करता हूं।

ॐ शब्द स्पर्श रूप रस गंधाः मे शुद्धयन्ताम्। ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासं स्वाहा।

मेरे शब्द स्पर्श, रूप, रस, गंध, रूप तन्मात्र पवित्र होवें मे प्रकाश स्वरूप रजोगुण से रहित निष्पाप होऊ तदर्थ यह आहूती अग्नि में अर्पण करता हूं।

ॐ मनोवाक्कयकर्माणि मे शुद्धयन्ताम्। ज्यासेतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासं स्वाहा।

मेरे मन, वचन, शरीर के कर्म शुद्ध होवें मैं प्रकाशस्वरूप रजो गुण रहित निष्पाप होऊ तदर्थ यह आहूति अग्नि के अर्पण है।

ॐ अन्नमय प्राणमय मनोमय विज्ञानमय आनन्दमयाः मे शुद्धयन्ताम् ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासं स्वाहा।

मेरे अन्नमय, प्राणमय, मनामय, विज्ञानमय, आनन्दमय ये पांचकोश शुद्ध होवें, मैं प्रकाशस्वरूप रजोगुण रहित निष्पाप बनूं तदर्थ यह आहूती अग्नि के अर्पण करता हूं।

ॐ आत्मा मे शुद्धयन्ताम् ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासं स्वाहा।

मेरा आत्मा (जाग्रत, अभिमानी, विश्व संज्ञा वाला) शुद्ध

होवे, मैं प्रकाश रूप रजोगुण रहित निष्पाप बनूं, तदर्थ यह आहूती अग्नि के अर्पण करता हूं।

ॐ अन्तरात्मा में शुद्धयन्ताम्। ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासं स्वाहा।

मेरा अन्तरात्मा (स्वप्न अभिमानी तेजस संज्ञा वाला) शुद्ध होवे, मैं ज्योति रूप रजोगुण रहित निष्पाप बनूं तदर्थ यह आहूती अग्नि में अर्पण करता हूं।

ॐ परमात्मा मे शुद्धयन्ताम्। ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासं स्वाहा।

मेरा परमात्मा (सुषुप्ति अभिमानी प्राण संज्ञा वाला) पवित्र होवे मैं प्रकाश स्वरूप रजोगुण रहित निष्पाप बनू तदर्थ यह आहूती अग्नि में अर्पण करता हूं।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा। (५ बार आहूती दो)

ॐ मतिश्च में सुमतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् स्वाहा।। ५ बार

ॐ विश्वानि देव सवितुर्दुरितानि परासुव, यद्भद्रंतन्न आसुव स्वाहा। (३ बार आहूती दो)

ॐ असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्मा अमृतं गमय।। (३ बार आहूती दो)

तत्पश्चात् अभिष्ट मंत्र से या गायत्री मंत्र से १०८ या अधिक आहूती देवें, पुनः नीचे लिखे मंत्र से पूर्णाहूती देवे।

पूर्णाहूती मंत्र -

ॐ मूर्द्धानन्दिवोऽ अरतिं पृथिव्या वैश्वानर मृतऽआजातमग्निम्। कविं सम्राजमतिर्थि जनानामा सन्नापात्रं जनयन्त देवा।

आकाश के अन्दर सूर्य रूप से वर्तमान होकर भी इस लोक में अग्नि के रूप में सदा विद्यमान अखिल संसार के हितैषी यज्ञों के अन्दर अरणि से मथित होकर प्रगट स्वभक्तों के ऊपर परम अनुग्रह करने वाला प्रकाशमान, यजमानों के सत्कार योग्य, देवताओं का मुख रूप अग्नि को सर्व प्रथम देवताओं ने यज्ञ के द्वारा उत्पन्न किया। उस अग्नि में अर्पण की हुई आहुतियां मेरे कर्मो को सिद्ध इहलौकिक तथा पारलौकिक सुखों को देवें।

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदुच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते, स्वाहा।।

ॐ वह पूर्ण है, यह पूर्ण है, पूर्ण से पूर्ण निकलता है, पूर्ण से पूर्ण लेकर पूर्ण ही परिशिष्ट रहता हैं

विनियोग-

पूर्द्धानन्दिव इत्यस्य भारद्वाज ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दों वैश्वानरोऽग्निर्देवता मूर्द्धान होमे विनियोगः ।

तदनन्तर समंत्र भस्मी लगाकर अग्नि देव की प्रार्थना करें।

अग्निप्रार्थना- ॐ तनूपा अग्ने सि तन्वं मे पाहि। ॐ आयुर्दा अग्नेस्यायुर्मे देहि। ॐ वर्चोदा अग्ने सि वर्चो मे देहि। ॐ अग्न यन्मेतन्वा ऊनं तन्म आपृण ।।

हे अग्न ! तुम शरीर का पालन करने वाली हो, अतः मेरे शरीर की रक्षा करो। हे अग्न ! तुम आयु देने वाली हो, अतः मुझे आयु दो। हे अग्ने ! तुम बल देने वाली हो, अतः मुझे बल दो। हे अग्ने ! जो कुछ मेरे शरीर में कमी होवे तो उसे आप पूरी करने की कृपा करें।

ॐ तेजोसि तेजो मयि देहि। ॐ वीर्यमसि वीर्य मयि देहि। ॐ बलमसि बलं मयि देहि। ॐ ओजोस्योजो मयि देहि। ॐ मन्यरसि मन्यं मयि देहि। ॐ सहोसि सहो मयि देहि।

हे अग्ने ! आप तेजस्वी हैं, मुझे तेज प्रदान करें। हे अग्ने ! आप वीर्य रूप हैं, अतः मुझे वीर्य दें। हे अग्ने! आप बलवान हैं, अतः मुझे भी बल दें। हे अग्ने ! आप ओज (बल) वाले है अतः मुझे ओज (हार्दिक बल) प्रदान करें। हे अग्ने ! आप सहनशील है, मुझे भी सहनशीलता दें।

प्रणाम-

ॐ यज्ञपुरूषाय नमः। ॐ पावकाय नमः । ॐ जातवेदसे नमः। ॐ यज्ञात्मने नमः। ॐ परब्रह्मणे नमः। ॐ तत्सत् ब्रह्मार्पणमस्तु।।

चर्पट पंचरिका

(जगद्गुरु श्री मच्छकराचार्य प्रणीतम्)

एक समय आचार्य भगवान श्री शंकर स्वामीजी श्री काशी में गंगा स्नान के लिये जा रहे थे। मार्ग में एक वृद्ध ब्राह्मण व्याकरण की डुकृञ् करणे धातु को याद कर रहा था, उसकी ऐसी शोचनीय दशा देख कर आचार्य श्री शंकर स्वामीजी ने उसी समय उसको निमित्त बना कर संसार के सभी मनुष्यों को उपदेश देना प्रारम्भ किया, वही उपदेश 'चर्पट पंचरिका' के नाम से संसार में प्रसिद्ध हुआ। वह यह है:

भज गोविन्दं भज गोविन्दं, गोविन्दं भज मूढमते।
प्राप्ते सन्निहिते मरणे, नहि नहि रक्षति डुकृञ करणे।।

हे मूढ़ बुद्धि वाले ! अब तू वृद्ध हो गया है, मृत्यु भी समीप ही है, मृत्यु के समय में 'डुकृञ करणे' धातु तेरी रक्षा नहीं करेगा। अतः तू व्यर्थ ही दन्त-खटाखट छोड़ कर भगवान् श्री गोविन्द का एकाग्र मन से निरन्तर भजन कर। वृद्धावस्था में हरि भजन को छोड़कर व्याकरण के पीछे पड़ना नितान्त मूर्खता है।

बालस्तावत्क्रीड़ासक्तस्तरुणस्तवात्तरुणीरक्तः ।
वृद्धस्तावच्चिन्तामग्नः परेब्रह्मणि कोऽपि न लग्नः ।।भ.।।

हे मूढ़मते ! जब तू बालक था, तब खेल कूद में ही लगा रहा, जब तू जवान हुआ तब जवान स्त्री की सेवा में ही आसक्त बना रहा, और अब जब तू वृद्ध हुआ, तब अनेक चिन्ताओं में डूबा हुआ है। कभी भी परं पद प्राप्ति के लिए भगवान के ध्यान में मन नहीं लगाया। अतः हे मूढ़ ! गोविन्द भगवान का निरन्तर भजन कर।

अंगं गलितं पलितं मुण्डं, दशन विहीनं जातं तुण्डम्।
वृद्धो याति गृहित्वा दण्डं, तदपि न मुन्चत्याशापिण्डम्।।

हे मूढ बुद्धि वाले ! तेरे हाथ, पेर आदि सब अंग गल गये हैं। सिर, डाढ़ी, मूंछ आदि के बस बाल रूई के समान श्वेत हो रहे हैं। मुख दान्तों से रहित पोपला हो गया हैं अब तू वृद्ध होकर कांपता हुआ लकड़ी टेक-टेक कर चलता है। तथापि तू संसारिक आशाओं के पिण्ड को छोड़ता नहीं है। मरने के दिन समीप हैं, अब तो निश्चित् मन से श्री गोविन्द का भजन कर।

पुनरपि जननं पुनरपि मरणं, पुनरपि जननी जठरे शयनम्।
इस संसारे खलु दुस्तारे, कृपयाऽपारे पाहि मुरारे।।

हे मूढ़मते ! अनादि काल से तू ने बारंबार असंख्य जन्म लिया यानी अनेकबार ऊंच नीच शरीर धारण किया। असंख्य बार फिर फिर उसी ही भयंकर मृत्यु को प्राप्त हुआ, और असंख्य माताओं के दुर्गन्धमय कष्टप्रद उदरों में सोया। हे मूढ़ ! अब तो तू इस संसार चक्र से छूटने के लिए उस मुरारि भगवान से प्रार्थना कर कि - हे मुरारि प्रभु ! इस दुस्तर अपार संसार सागर से मेरा उद्धार कीजिए, मैं एक मात्र आपके ही शरण में हूं। और हरदम उस कृपानिधि गोविंद भगवान् का एकाग्र मन से भजन कर।

दिनमपि रजन सायं प्रातः, शिशिर वसन्तौ पुनरायातः।
कालः क्रीडति गच्छत्यायुस्तदपि न मुन्चत्याशावायुः।।

क्रमशः बारम्बार दिन होता है और जाता है, रात होती है और जाती है, शाम और सुबह होता है और देखते देखते ही चला जाता है, शिशिर वसन्त

आदिक अनेक ऋतुएं बारम्बार आकर चल देती हैं, इसी प्रकार काल भगवान की विचित्र क्रीड़ा निरन्तर होती रहती है और इससे आयु बरबाद होता जाता है, हाय। तथापि महान् खेद की बात है कि - हे मूढ़मते ! तू इस तुच्छ संसार की आशारूप पवन को छोड़ना नहीं चाहता। अरे मूर्ख! काल देवता ने तेरा बहुत कुछ तो अमूल्य आयु नष्ट कर दिया, अब बहुत ही थोड़ा आयु बच रहा है, उसको तो तू सार्थक बना, उससे निरन्तर गोविन्द भगवान का भजन कर।

जटलो मुण्डी लुश्चितकेशः, काषायाम्बर
बहुकृतवेषः।
पश्यन्नपि न च पश्यति लोकः, उदरनिमित्तं
बहुकृतवेषः।।

पेट भरने के लिए कभी तो सिर पर जटाएं रख कर जटाधारी बना, कभी सिर के सब बालों को मुण्डा कर मुण्डी बना, कभी बालों को नोंचवा कर जैन साधु बना, कभी भगवा वस्त्र धारण कर संन्यासी बना इत्यादि अनेक प्रकार के विविध वेष धारण किये, तथापि मूढ़ मनुष्य इस असार-संसार की क्षण भंगुरता को प्रत्यक्ष देखता हुआ भी मोह ममता में फंस कर उसे वह नहीं देखता। मतलब यह है इस शरीरादि प्रपंच सार रहित दुःखमय एवं क्षण भंगुर जानता हुए भी मोहवश इन्द्रियों के लालन पालन के लिये ही अनेक पाखण्ड ढोंग कर अनर्थ कमाता है, और उस समय सनातन प्रभु को जानता हुए भी उसका तिरस्कार करता है वह बड़ी ही आश्चर्य की बात है। अतः हे मूर्ख ! सब ढ़ोंग एवं ढंग को छोड़कर श्रद्धा पूर्ण निष्कपट हृदय से एक मात्र उस गोविन्द भगवान के भजन करने में कटिबद्ध होजा।

वयसि गते कः कामविकारः, शुष्केनीरे
कःकासारः।
क्षीणे वित्ते कः परिवारों, ज्ञाते तत्वे कः
संसारः।।

अवस्था चली जाने पर काम विकास शक्ति नहीं रहती। पानी सूख जाने पर तालाब नहीं रहता। धन चले जाने पर परिवार नहीं रहता, यानी स्त्री पुत्र आदि परिवार को स्नेह तब तक ही रहता है, जब तब उसके पास धन रहता है, जब धन नहीं रहता है, तब परिवार का स्नेह कपूर की तरह उड़ जाता है। जैसे एक अखण्ड अद्वैत रूप गोविन्द का यथार्थ तत्व जानने पर यह लाभ रूपात्मक क्लेशप्रद संसार नहीं रह सकता। इसलिये हे मूर्ख! उस तत्व को साक्षात्कार के लिए गोविन्द भगवान का भजन कर।

अग्रे बन्हिः पृष्ठे भानू, रात्रौ
चिबुकसमर्पिताजनुः।
करतल भिक्षा तरुतलवासस्तदपि न
मुञ्चत्याशापाशः।।

तपस्वी होने के कारण आगे अग्नि जलती है, पीछे धूप पड़ती है, एवं दिगम्बर नग्न रहने के कारण रात को घुटनों के बीच में डाढ़ी रखकर सोना पडता है। किसी अवस्था में पात्र न होने से हाथ ही भिक्षा पात्र बना है, बनवासी होने के कारण पेड़ के नीचे सोना पड़ता है। तथापि बड़े ही गजब की बात है कि ऐसा तपस्वी विरक्त भी संसार के भोग विलास आशारूपी फांसी को छोड़ना नहीं चाहता। अतः हे मूर्ख ! गोविन्द का भजन कर, जिससे तेरी तपश्चर्या एवं तितिक्षा सफल बनें।

यावद्वित्तोपार्जन सक्तस्तावन्निजपरिवारो रक्तः।
पश्चाज्जर्जरभूते देहे वार्ता कोऽपि न पृच्छति
गेहे।।

जब तक मनुष्य धन कमाने में समर्थ होता है, तब तक उसका परिवार कुटुम्ब उससे स्नेह करता है, उसके अधीन रहता है, और पीछे वृद्धावस्था आने के कारण या रोगी हो जाने के कारण, शरीर निर्बल हो जाता है, धन कमाने की शक्ति नहीं रहती, तब घर के कुटुम्बी लोग उससे बात तक

भी करना नहीं चाहते। अतः हे मूढ़मती ! इस स्वार्थी संसार के पीछे पागल मत बन, उससे स्नेह छोड़ और निरन्तर गोविन्द प्रभु के भजन में चित्त को जोड़, यही कल्याण प्राप्ति का शान्त एवं सुखकारी मार्ग है।

रथ्याचर्पटविरचितकंथः, पुण्यापुण्यविवर्जितपंथ।
न त्वं नाहं नायं लोकः, पदपि किमर्थं क्रियते शोकः।।

मार्ग में पड़े हुए चीथड़ों को बीन कर उनकी कंथा बना कर उसको पहनता है, पुण्य एवं पाप के मार्ग को छोड़ कर शुद्र विरक्त मार्ग में विचरता है 'तू नहीं, मैं नहीं, यह संसार भी नहीं है, किन्तु एक रस अखण्ड आत्मा ही है' ऐसा बारम्बार बोलता भी है, तथापि हे मूर्ख ! तू शोक क्यों करता है अर्थात् विरक्त होने पर भी अब तक तेरे हृदय से कामना रूपी डाकनी पूर्णतया निकली नहीं हैं जब तब उस डाकिनी का आवेश हृदय से सर्वथा दूर न जो जाए, तब तक आनन्दनिधि आत्मा का पूर्ण साक्षात्कार नहीं हो सकता और आत्मा साक्षात्कार के बिना शोक की निवृत्ति भी नहीं हो सकती। 'तरति शोकमात्मवित्' आत्मा को अपरोक्ष स्वरूप आत्मा का निरन्तर भजन चिन्तन कर, जिससे तेरे तुच्छ शोक की निवृत्ति हो जाए।

नारीस्तन भरजघन निवेशं, दृष्टवां मिथ्या मोहावेशम्।
एतन्मांसवसादि विकास, मनसि विचारय बारंवारम्।।

हे मूढमते ! नारी के पीत स्तन और पुष्ट जघन (पेडू) की रचना देख कर क्यों व्यर्थ ही मोह का आवेश उत्पन्न कर विकारी बनता है। रे मूढ़ ! इतना भी जानता नहीं है कि ये स्तन, जघन आदि महामलीन दुर्गन्ध रूप मांस चरबी आदि गंदे पदार्थो से बने हैं, इस प्रकार तू उनकी मलीनता का बारम्बार विचार कर, और शुद्र स्वरूप श्री गोविन्द भगवान् का भजन कर, मोहवेश को शांत कर।

गेयं गीता नामसहस्त्रं, ध्येयं श्रीपतिरूपमजस्त्रम्।
नेयं सज्जनसंगे चित्तं, देयं दीन जनाय च वित्तम्।।

हे मूढ़ मते ! संसार का क्लेशप्रद्र गान छोड़कर गीता और विष्णु सहस्त्रनाम का ही निरन्तर गान कर। संसार का ध्यान त्याग कर भगवान श्री विष्णु का ही सदा ध्यान किया कर। नीच विषयी पामर मनुष्य का संग त्याग कर, सज्जन विद्वान् विरक्त महात्माओं के संग में ही चित्त लगा और दीन दुःखी जनों को ही दान दिया कर तथा श्री गोविन्द भगवन का निरन्तर भजन कर।

भगद्गीता किञ्चिदधीता, गंगाजल लवकणिया पीता।
येनाकारि मुरारेरर्चा, तस्य यमः किं कुरुते चर्चाम।।

जिसने भगवद्गीता का थोड़ा भी पाठ किया है जिसने थोड़ा भी गंगा जल का पान किया है, और जिसने मुरारि प्रभु की पूजा की है, उसकी यमराज क्या चर्चा कर सकता है ? कदापि नहीं कर सकता। अतः हे मूढ़ ! यदि यमराज के भयंकर पाश से छूटना है तो गीता का पाठ कर, गंगा जल का पान कर एवं भगवान की पूजा कर और मंगलमय गोविन्द भगवान का भजन किया कर, यहीं संसार के कष्टों से छूटने का परम उपाय है।

कोऽहं कस्त्वं कुत आयातः, का मे जननी को मे तातः।
इति परिभावय सर्वमसारं, सर्वत्यक्त्वा स्वप्नविचारम्।।

मैं कौन हूं ? तू कौन है ? कहां से आता है? मैं कहां से आया हूं ? मेरी माता कौन है ? मेरा पिता कौन है ? इसका विचार कर, श्रेष्ठ महात्माओं से इस विषय को पूछा कर। रे मूर्ख यह तमाम

शरीरादि संसार स्वप्न संसार के समान असार एवं मिथ्या है, न कोई किसी की माता है न पिता है, न कोई सम्बंधी है, न शरीरादि भी है अतः इस क्षण भंगुर संसार की भावना छोड़कर एक मात्र उस गोविन्द भगवान का निश्चित मन से भजन कर।

का ते कान्ता कस्ते पुत्र, संसारोऽयमतीव विचित्रः।
कस्यं त्वं वा कुत आयतः, तत्वं चिन्तय तदिदं भ्रातः।।

तेरी स्त्री कौन है ? तेरा पुत्र कौन है ? अर्थात् न कोई तेरी स्त्री है एवं न तो कोई पुत्र है, व्यर्थ ही उनमें ममता बढ़ा कर क्यों पागल हो रहा है, यह संसार अत्यन्त विचित्र स्वार्थ प्रचुर है, अर्थात कोई किसी का नहीं है, जो कुछ वस्तु देखने में आती है, वह कुछ काल के बाद अवश्य ही अदृश्य हो जाती है। अतः हे भाई ! तू किसका है ? और कहां से आया है ? इसका विचार कर और निरंतर श्री गोविन्द का भजन कर।

सुरतटिनी तरुमूल निवासः, शयूयाभूतल मजिनं वासः।
सर्वपरिग्रह भोग त्यागः कस्य सुखं न करोति विरागः।।

गंगा किनारे के वृक्ष की मूल में निवास करना, भूमि ही शयूया बनाना, मृग चर्म ही पहिनने के लिये वस्त्र समझना, स्त्री, पुत्र, धन, मकानादि परिग्रह छोड़ देना और समस्त भोग विलास की इच्छा त्याग करना ही वैराग्य का आभ्यंतर एवं बाह्य दो प्रकार का स्वरूप है। ऐसा वैराग्य किसको निर्मल सुख नहीं देता ? यानि सब को सुख देता है अर्थात् विरक्त पुरुष ही महा सुखी, सर्वथा निर्भय, श्रेष्ठ एवं धन्य हैं। इसलिये हे मूढमते! शुद्ध वैराग्य की प्राप्ति के लिए श्री गोविन्द भगवान का भजन कर।

कविता

१

तुमसे यह कैसा रिश्ता है,
जो तुम्हें भूल नहीं पाता हूं।
कसक उठता है मनवा जब मेरा,
बार-बार उसे समझाता हूं।
पर दिल का क्या करूं मैं,
जो तुम्हारे लिए उद्वेलित हो जाता है।
बेबस जब यह हो जाता है,
नैनन चुपके-चुपके अश्र बहाता है।
खिड़की और झरोखे पर जब जाता हूं,
मेरे नैनन तुम्हे ही ढूंढा करता है।
लगता है तुम्हारे बिना कोई मेरे,
जीवन का सुख चैन लूटा करता है।
मेरी यह मजबूरी है कि मैं
तुम्हें कुछ नहीं कहता हूं।
बस यही समझ लेना मेरी मितवा,
मैं जीते जी मरता हूं।

२

दो दिन का जीवन है मितवा,
क्यों तूं है इतनी दूर
आंखे मेरी तुझको ढूंढ रहीं है,
मनवा मेरा है मजबूर।
तन्हा जीवन कांटा सा चुभता,
रैना में मुझको मिलता चैन,
जब जब तेरी यादें आती है,
हो जाता हूं मैं बेचैन।
काश ! मेरे जीवन में तूं आ कर,
खुशियों का दीप जला देती।
चिर निद्रा में सोने से पहले,
मेरी आत्मा अपनी प्यास बुझा लेती।

पी. सी. गुप्ता, समस्तीपुर (बिहार)

श्री गुरु महिमा

जय सद्गुरु देवन देव वरं, निज भक्तन रक्षण देह धरम्।
पर दुःख हरं सुख शान्ति करं निरुपाधि निरामय दिव्य परम् ।।१।।

त्रय लोक अबाधित शान्ति मयं, जनपोषक शोषक ताप त्रमम् ।
भय भंजन देत परं अभयं, मन रंजन भाविक भावप्रियम् ।।२।।

ममतादिक दोष नशावत है, शम आदिक भाव सिखावत है ।
जग जीवन पाप निवारत है, भव सागर पार उतारत है ।।३।।

कहूं धर्म बतावत ध्यान कहीं, कहुं भक्ति सिखावत ज्ञान कहीं ।
उपदेश नेम रु प्रेम तुम्हीं, करते प्रभु योग रु क्षेम तुम्हीं ।।४।।

मन इन्द्रिय जाहि न जान सके, नहिं बुद्धि जिसे पहिचान सके ।
नहिं शब्द जहां पर जाय सके, बिन सद्गुरु कौन लखाय सके ।।५।।

नहिं ध्यान न ध्यातृ न ध्येय जहां, नहिं ज्ञातृ न ज्ञान न ज्ञेय जहां ।
नहिं देश न काल न वस्तु तहां, बिन सद्गुरु को पहुंचाय वहां ।।६।।

नहिं रूप न लक्षण ही जिसका, नहिं नाम न धाम कहीं जिसका ।
नहिं सत्य असत्य कहाय सके, गुरुदेव ही ताहि जनाय सके ।।७।।

गुरु कीन कृपा भव त्रास गई, मिट भूख गई छूट प्यास गई ।
नहिं काम रहा नहिं कर्म रहा, नहिं मृत्यु रहा नहिं जन्म रहा ।।८

भग राग गया हट द्वेष गया, अब चूर्ण भया अणु पूर्ण भया ।
नहिं द्वैत रहा सम एक भया, भ्रम भेद मिटा मम तोर गया ।।९।।

नहिं मैं नहिं तू नहिं अन्य रहा, गुरु शाश्वत आप अनन्य रहा ।
गुरु सेवत ते नर धन्य यहां, तिनकू नहिं दुःख यहां न वहां ।।१०।।

अज्ञान मोह निद्रा से उठो

तत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत

हे मनुष्यों ! उठो ! जागो (सावधान हो जाओ) श्रेष्ठ महापुरुषों के पास जाकर (उनके द्वारा उस पर ब्रह्म परमेश्वर को जान लो।

सत्शास्त्र कहते जगत मिथ्या, स्वप्न निस्सार है।
निद्रा भयानक व्याधि है, आपत्ति का भण्डार है।
तू चेष्ठ की सी चल रही, क्यो सो रहा है धूप में।
हे पथिक! निद्रा त्याग दे, अब जागजा निज रूप में।।१।।

कहते अमानी संत भी निद्रा महा अज्ञान हैं।
त्यागे निबा अज्ञान निद्रा, होय नहीं कल्याण है।
आंखों सहित अन्ध हुआ, क्यों गिर रहा भव कूप में।
हे पथिक! निद्रा त्याग दे, अब जागजा निज रूप में।।२।।

जब कष्ट पड़ता आनके कहते जगत् मिथ्या सभी।
संसार है निस्सार बालक, युवक कहते वृद्ध भी।
अनुभव करे तू आप दुःख का, रंक में और भूप में।
हे पथिक! निद्रा त्याग दे, अब जागजा निज रूप में।।३।।

दिन रात डण्डा गून्जे मृत्यु का यम का नगारा गाजता।
नित कामना विछन डसे, तू मगन पापड़ पूप में।
हे पथिक ! निद्रा त्याग दे, अब जागजा निज रूप में।।४।।

भोगे सदा तू कष्ट गाढ़ी, नींद में हैं सो रहा।
जन्जीर आशा से बंधा, सर्वस्त्र अपना खो रहा।
आसक्ति ने तुझको गिराया, है अन्धेरे कूप में।
हे पथिक ! निद्रा त्याग दे, अब जागजा निज रूप में।।५।।

तब दुग तनु में चोर डाकू, ठग हजारों भर रहे।
तव दिव्य समता लूटते, आनन्द धन है हर रहे।
सुन्दर असुन्दर तू हुआ, कर राग रूप कुरुप में।
हे पथिक ! निद्रा त्याग दे, अब जागजा निज रूप में।।६।।

आया समय अब खोल आंखे, मोह निद्रा छोड़ दे।
जा जाग भव से भाग अब नाता जगत से तोड़ दे।
पछतायेगा दुख पायेगा, रुचि मान ओदन सूप में।
हे पथिक ! निद्रा त्याग दे, अब जागजा निज रूप में।।७।।

सत्शास्त्र के सुन वाक्य सत्, निर्मल हुआ अन्तकरण।
त्यागी भयंकर नींद जागा, पथिक गुरु की ली शरण।
निज रूप में जाग्रत हुआ कर प्रेम देव अनूप में।
पाया अकंटक राज्य अविकल, जाग कर निज रूप में।।८।।

साभार- सूक्ष्म-सरल-संध्या-हवनम्

दीपावली अभिनंदन

दु. 20784
नि. 20787

विनोद टेन्ट हाऊस

कृषि उपज मण्डी के सामने, मेड़ता सिटी (राज.)

बंगाली महफिल, बगाली हाऊस, व्हाईट हाऊस एवं क्रोकरी
तथा सभी प्रकार की उत्तम व्यवस्था उपलब्ध है ।

सूर्य सेवा सदन

(शादी पार्टी व अन्य अवसर पर ठहरने की उचित व्यवस्था)

प्रो. - पुखराज शर्मा ⁂ विनोद शर्मा

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाये -

मान्यता प्राप्त

नवीन बाल विद्या मंदिर

प्रथम से पंचम कक्षा तक बच्चों के
सर्वांगीण विकास के लिये कृत संकल्प

नामदेव भवन, मेड़ता सिटी

व्यवस्थापक-विवेकानन्द वर्मा

दीपावली पर हार्दिक बधाई

।। जय आनन्द ।। ।। जय मधुकर ।।

श्री वर्द्धमान जैन ज्ञानपीठ

जैन धार्मिक शिक्षण व संस्कार का एक मात्र
अद्वितीय स्थान जैन बधु अपने बच्चों को
पढने भेजे ।

मेड़ता सिटी - 341510

☎ (01590) 20792

कार्यालय – नगरपालिका मण्डल, मेड़ता सिटी

—: अपील :—

शहर के सभी नागरिकों को दीपावली पर्व की शुभकामनाये एवं नूतन वर्ष आपके लिये मंगलमय हो।

मेड़ता शहर भक्त शिरोमणि मीरां की ऐतिहासिक नगरी है इसकी सुन्दरता व स्वच्छता बनाये रखना हम सबका परम कर्तव्य है।

जन्म या मरण-जरूरी है पंजीकरण

इसके लिये समय पर ही पालिका कार्यालय में उपस्थित होकर आवश्यक कार्यवाही करे।

"जय साक्षरता"

इस हेतु शहर में जन चेतना केन्द्रों की सफलता आपकी सहभागिता पर निर्भर है। निरक्षरों व नवसाक्षरों को जन चेतना केंद्रों से जोड़ने में आप सब बुद्धिजीवी वर्ग के लोग मदद करावे।

गृहकर समय पर जमा करवाकर नगरपालिका को सहयोग प्रदान करावे।

अनावश्यक अतिक्रमण न करावे तथा अतिक्रमण को हटाने में नगरपालिका को सहयोग करावे।

घर का कूड़ा करकट नगरपालिका द्वारा निश्चित किये गये यथा स्थान पर ही डाले।

कष्ट के लिये धन्यवाद

शेरसिंह राठौड़
अधिशाषी अधिकारी
नगरपालिका, मेड़ता सिटी

सरिता टाक
अध्यक्षा
नगरपालिका, मेड़ता सिटी

सारे जहां से
अच्छा
हिन्दोस्तां
हमारा
भारत की स्वतंत्रता की
50वीं वर्षगांठ
davp 96/245

Heartly Dipawai Greetings

With Best Compliments from

RST
CST No. 2136|03018 STD 01590 ☎ [O] 20681
[R] 20370

RAJASTHAN AUTO TRACTOR & MACHINERY

Nagar Palika Road, **Merta City** - 341510
Distt Nagaur (Raj.)

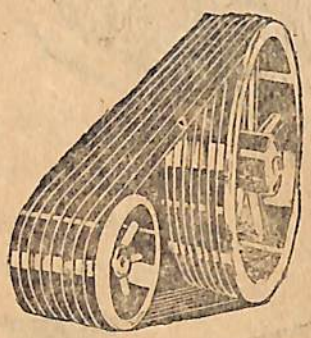

ZKL

FENNER
V-BELTS
FAN BELTT

SKF

Authorised Dealeors -
FENNER, ROLAX & SIMPLEX V. BELTS & FAN BELTS
Dealeors -
All Type Bearing SKF, ZKL, NBC, Reduation Cear
Elevelor Belt Convear Belt Eleotrio Motors Spairs &
Machinery Parts ETC.

जय भिक्षु

जय तुलसी

☎ (S) 20121
(R) 20221

Jawarilal Dharmichand Bothra

Dry Fruits & Kirana Marchants

Mank Chowk, **Merta City** - 341510

दीपावली के शुभ अवसर पर हार्दिक शुभकामनाओं सहित -

STD 01590

☎ 20229

शिशु निकेतन मोर्डन स्कूल

मीडियम इंगलिश कचहरी रोड़, मेड़ता सिटी

(पढने का एक मात्र संस्थान)

व्यवस्थापक
सुनीता प्रभाकर

प्रभाकर ट्रेडर्स

चूना, चुरी, कली सप्लायर्स बेग 15 किलो लॉयन ब्राण्ड के बिक्रेता

मेड़ता सिटी जिला - नागौर (राज.)

प्रो. नरेश प्रभाकर

विज्ञापन (पन्ना) विवरण

ब्रह्मर्षि डॉ. नारायण शर्मा कौशिक द्वारा लिखित एवं सम्पादित शीघ्र प्रकाशित होने वाली पुस्तकों की सूची

1 नावण (सूर्य पूजा) पूजन पद्धति (सूतिका स्नान मुहूर्त्त) भाषा टीका
2 श्री गंगा पूजन पद्धति (श्री गंगाजलि पर) भाषा टीका
3 नवग्रह शांति विधान (वास्तु एवं ग्रह शांति) भाषा टीका
4 त्रिकाल संध्या (सभी वर्गों के लिये) भाषा टीका
5 अनुभूत यंत्र तंत्र मंत्र (सचित्र) सविधि (सरल भाषा में)
6 हस्त रेखाये बोलती है। (सामुद्रिक शास्त्र) सचित्र
7 मानवता की विद्या (सौदाहरण) प्रवचनसार
8 श्री परशुराम चालीसा मय साधना विधि (सरल भाषा में)
9 ज्योतिष विद्या (जन ज्योतिष) भाषा टीका में
10 नित्य कर्म (श्री निम्बार्क सम्प्रदाय अनुयायियों के लिये) सरल भाषा
11 स्वप्न फल (सार रूप) व (उपाय/विधि) भाषा में
12 केरल प्रश्नोत्तरी अनुभूत (विश्वास पर आधारित) भाषा में
13 आयुर्वेद सरलोपचार (घरेलु योग से चिकित्सा) भाषा में
14 गुरू चालीसा व उपासना (दोहों में) सरल हिन्दी भाषा में
15 अमृत वाणी संकलन लौकिक एवं वैदिक

नोटः- उक्त पुस्तकों को मूल प्रतियां तैयार है। यदि कोई प्रकाशक/सहयोगी स्वयं की ओर से प्रकाशित कराना चाहे तो संपर्क कर सकते है। विज्ञापन देना चाहे तो सादर प्राथनीय है। उक्त पुस्तके आप अपने पूर्वजों की स्मृति के लिये भी प्रकाशित करवाकर जन हित में निःशुल्क उपयोग/भेंट कर सकते है। ब्रह्मर्षि डॉ नारायण शर्मा कौशिक द्वारा सम्पादित प्रकाशित पुस्तके जो वतमान में उपलब्ध है। एम. ओ. द्वारा राशि भेजकर मगवाये।

1 हितकारी यंत्र मंत्र तंत्र (सविधि) मूल्य 27 रू. डाक खर्च अलग
2 शारदा लक्ष्मी पूजन (जैन ओसवाल हेतु) मूल्य 2.50 रू. डाक खर्च अलग
3 बाल ज्योतिष बोध (प्रकाशक ज्ञान सागर प्रस किशनगढ (राज.)
5 सामायिक सूत्र मय 100 प्रश्न जैन शास्त्र मुल्य 3 रू. डाक खर्च अलग

आर्य ब्रॉदर्स एवं बुक सेलर अजमेर के यहां प्रकाशनार्थ प्रषित पुस्तके :-
(1) वृहद सालासरोपासना (श्री सालासर हनुमान)
(2) उपाकर्म पद्धति (सावण मासोपासना युक्त)

श्री ज्ञान सागर प्रेस किशनगढ सिटी (राज.) के यहां प्रकाशनार्थ प्रेषित पुस्तके :-
1 शिवजातक [ज्योतिष खण्ड] भा टी. 2 संक्षिप्त गायत्री उपासना 3 घरेलु उपचार

संपर्क- वेदांग ज्योति संस्थान मेड़ता सिटी (राज.) 341510 फोन 20792

★ 786 ★

अ श र फी

डेयरी फार्म

हमारे यहां पर दूध, मक्खन, पनीर की 24 घण्टे सुविधा उपलब्ध है।

एक बार सेवा का मौका दे।

व्यापारियों की मस्जिद, कचहरी रोड़

प्रो. बशीर S/o बागाजी

॥ ॐ भूर्भुव स्वः ॥

भारतीय प्राच्य महाविद्या वैदिक वाङ्मय, ज्योतिष, आयुर्वेद, साहित्यिक, यंत्र मंत्र तत्र साधना युक्त उत्कृष्ट अन्तर्राष्ट्रीय स्तरीय हिन्दी भाषीय एक मात्र मासिक पत्रिका

भारत सरकार द्वारा विज्ञापनों हेतु स्वीकृत

वेदांग ज्योति [हि.मा.]

पढिये। ग्राहक बने एवं बनाइये।

संस्था का बिज्ञापन दीजिये एवं प्रतिष्ठा पाइये।

प्रधान सम्पादक (अवैतनिक) ब्रह्मर्षि डॉ. नारायण शर्मा कोशिक

वार्षिक शुल्क 80 रू. एक प्रति 8 रू.

पंचवर्षीय 350 रू. आजीवन 1151 रू.

— सम्पर्क —

वेदांग ज्योति संस्थान मेड़ता सिटी (राज.)

☎ (01590) 20792

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

व्यापार भविष्यफल १९९९ ई. का प्रकाशन

व्यापारिक परिक्षेत्र में व्यापार भविष्यफल 1999 ई. का अनुपम प्रकाशन दिस.98 के अंतिम सप्ताह तक वेदांग ज्योति संस्थान मेड़ता सिटी की ओर से किया जा रहा है। जिसका सम्पादन ब्रह्मर्षि डॉ. नारायण शर्मा कौशिक कर रहे है। पुस्तक का आकार 20×30/16 पृष्ठ 64 के लग भग होगे तथा मूल्य 25 रू. रखा गया है विज्ञापन देने वाले महानुभाव दि. 5-12-98 तक दे सकते है। पूर्ण पृष्ठ का 250 रू. आधा 150 रू. चौथाई 100 रू. तथा न्यूनतम 51 रू. विज्ञापन देय होगा विक्रेता को 20 प्रतिशत कमीशन देय होगा। पूर्ण पृष्ठ विज्ञापनदाता को 5पुस्तके दी जायेगी आधा पृष्ठ विज्ञापनदाता को 2 पुस्तके। न्यूनतम विज्ञापन दाता को खरीदनी पड़ेगी। सम्पर्क -

वेदांग ज्योति संस्थान मेड़ता सिटी (राज.)

☎ (01590) 20792

सर्वजनोपयोगी तिथि व्रत पर्वोत्सव एवं अन्य पचांग संबंधी संक्षिप्त जानकारी युक्त पॉकेट साईज का अद्वितीय पंचांग अवश्य खरीदे एवं लाभ पाइये।

श्री सालासर पंचांग १९९९ ई.

(पंचांगकर्त्ता ब्रह्मर्षि डॉ. नारायण शर्मा कौशिक ज्योतिषाचार्य) साइज 20×30/32 पृष्ठ 60 के लगभग मूल्य 3रू. डाक खर्च अलग प्रकाशक वेदांग ज्योति संस्थान मेड़ता सिटी [राज.] 341510 विज्ञापन दरे पूर्ण पृष्ठ 100 रू. आधा पृष्ठ 60रू. चौथाई पृष्ठ 40 रू न्यूनतम 25 रू. विक्रय पर कमीशन 20प्रतिशत देय होगा न्यूनतम100पंचांग पर कमीशन देय होगा 500 पर 30प्रतिशत कमीशन होगा। व्यवस्थापक-वेदांग ज्योति सस्थान

☎ [01590] 20792

ख्याली पुलाव

कुछ लोगों की आदत ही पड़ जाती है कि वे हमेशा भविष्य की चिन्ता में डूबे रहते है। उन के पास हमेशा बढिया मन्सूबे, भव्य योजनाये एवं ऊंचे किस्म के प्लान होते है जिसके ताने बाने में उलझे हुये वे वर्तमान से वचित रह जाते है। लेकिन कुछ लोगों को आदत ऐसी होती है कि सूत न कपास और जुलाहे से लट्ठमलट्ठा।

एक पति पत्नी में जमकर कहासुनी हो रही थीं। पति पत्नी में झगड़ा होना आश्चर्य की बात नहीं, न होना जरूर आश्चय की बात हो सकती है सो खूब झगड़ा हो रहा था।

वे जिस मकान में नये किरायेदार होकर रहने आये थे उस मकान के मालिक ऊपर की मंजिल पर ही रहते थे सो झगड़ा सुनकर नीचे आ गये। बेचारे बुजुर्ग और सज्जन स्वभाव के व्यक्त थे। बीच बचाव की इच्छा से ये पति से बोले - क्यों बाबू साहब, क्या हो गया ! क्यों झगड़ रहे हो ?

पति महाशय बोले अब क्या बताऊं। जरा सी बात का इस भगवान ने बतंगड़ बना दिया है। मैंने इससे कहा कि हमें अपने बेटे को वकील बनाना चाहिये पर यह कहती है कि नहीं डाक्टर बनाना चाहिये। अब आप ही बताइये, डॉक्टर की जिन्दगी भी क्या जिन्दगी है ? न दिन को चैन न रात को आराम। वकील होने के कई लाभ है जज हो सकता है, चीफ जस्टिस हो सकता है और नेता गिरी करने लगे तो मिनिस्टर भी हो सकता है। पर यह है कि मानती ही नहीं।

मकान मालिक ने पत्नी से पूछा क्यों बेटी, तुम क्या चाहती हो ?

पत्नी तन्ना कर बोली मैं यह कहती हूं कि सच झूठ की वकालत करना और चोर उचक्कों की सोहबत में रहना मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं। डॉक्टरी एक पेशा भी है और परोपकार का कार्य भी। उसमें धन भी मिलता है और सेवा भी होती है। मैं हर हालत में उसे डॉक्टर बनाऊंगी।

मकान मालिक बोले भई, तुम दोनों पूरब व पश्चिम की तरफ मुंह करके खड़े हो। शांति से दोनों विचार करो और बच्चे से भी राय कर लो कि वह खुद क्या बनना चाहता है। बुलाओं उसे मैं पूछ लेता हूं।

यह सुनकर पति पत्नी एक दूसरे का मुंह ताकने लगे। उन्हे चुप देखकर मकान मालक फिर बोले अरे भई, मुंह क्या देख रहे हो बच्चे को बुलाओं। पति धीरे से बोला जी बच्चा तो अभी पदा हो नहीं हुआ हम तो भविष्य की योजना पर विचार कर रहे थे।

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाये-

वीरू भाई
सैयद
अध्यक्ष

नागौर जिला युवक कांग्रेस